बलि पुहप तिलक सु नासिका। जनु कीर [1]चुंच प्रहासिका॥
तिन मुक्ति बेसर सोभए। ससि सुक्र म्मिलि रसि लोभए ॥छं०॥११३॥
तस नयन षंजन कंजए। सुरराज सुर मन रंजए॥
चाटंक नग जर जगमगै। विय चक्र करि ससि पर जगै ॥छं०॥११४॥
विय भौंह बंकित अंकुरी। जनु धनुक कामति [2]संकुरी॥
तसु मध्य तिलक जराइ कौ। [3]रविचंद मिलि रस आइ कौ ॥छं०॥११५॥
गुथि केस चिक्कन बेनियं। जनु ग्रसितं अहि ससि ऐनयं॥
सित दिव्य अंमर अंमरं। नह मलिन होत अडंबरं॥ छं०॥ ११६॥
अंगवास [4]आस सुगंधयं। संग चलत मधुव्रत संगयं॥
सम उदधि मथि कीनौ हरी। फटि फेन प्रगटित सुंदरी ॥छं०॥११७॥

अप्सरा के सर्वाङ्ग सौंदर्य्य की प्रशंसा।

मालिनी॥ हरित कनक कांतिं कापि चंपेव गोरी।
रसित पदम गंधा फुल्ल राजीव नेत्रा॥
उरज जलज सोभा [5]नभिकोसं सरोजं।
चरन कमल हस्ती लीलया राजहंसी॥ छं०॥ ११८॥

दूहा॥ कामालय सो संदरो। जिम अरि अग्गि अनंग॥
विधि विधान मति चुक्कयौ। कियै मैन रन अंग॥ छं०॥ ११९॥

मालिनी॥ अधर मधुर बिंबं, कुंठ कलयंठ रावे।
दलित दलक धभरे, स्त्रिंग धकुटीय भावि॥
तिल सुमन समानं, नासिका सोभयंती।
कलित दसन कुंदं, पूर्न चद्राननं च॥ छं०॥ १२०॥

कवि की उक्ति कि ऐसी स्त्रियों के ही कारण संसार चक्र का लौट फेर होता है।

दूहा॥ न्याय छुर्‍यौ मुनि रूप इनं। सुरति प्रीय चिय आहि॥
आ मोहै सुर नर असुर। रहैं ब्रह्म [6]सुष चाहि॥ छं०॥ १२१॥

(१) ए. कृ. को.-हंस। (२) ए. कृ. को.-संहरी। (३) ए. कृ. को.-रचि।
(४) ए. कृ. को.-सास। (५) ए. कृ. को.-नासिका। (६) मो.-मुष।

कवित्त ॥ इनह काज सुर धरत। सूर तन तजत ततच्छिन ॥
परत कंध नंचत कमंध। पर हनत स्वामि रन ॥
भरत पत्र जुग्गिनि समत्त। रंति पिवत पिवावति ॥
चरम चष्य पल भवत। पंछि जंबुक न अघावत ॥
पुनि वपु किरच्चि करतें समर। तव लहंत रस अच्छरिय ॥
तजि मोह पुत्त पुत्तिय सु तिय। बरत बरंग नभच्छरिय ॥छं०॥१२२॥

दूहा ॥ तिन मोहनि मोह्यौ सु मुनि। मोहे इंद्र फुनिंद ॥
नर नरिंद जुग जोग रत। उड़ उड़गन रवि इंद ॥ छं० ॥ १२३ ॥

अप्सरा का योगिनी भेष धारण करके सुमंत ऋषि के पास आना।

कवित्त ॥ तीय धर्‌यौ तन जोग। श्रवन मुद्रा सु [1]फटिक मय ॥
करि अष्टंग विभूति। न्हाय जनु निकसि सिंधु पय ॥
जटाजूट सिर बंधि। दिसा दस अंमर मानिय ॥
सिंगी कंठ धराइ। जोग जंगम्म सिव जानिय ॥
पवनं सु अरध ऊरध चढ़ै। बंक नालि पूरै गगन ॥
धरि ध्यान सुमन नासिक धरै। रहै ब्रह्म मंडल मगन ॥छं०॥१२४॥

दूहा ॥ तजिग भोग मन जोग धरि। निकट सुमंतह आइ ॥
करिवर डँवरू डहडह्यौ। अंबर सब सिव भाइ ॥ छं० ॥ १२५ ॥

अप्सरा के योगिनीवेष की शोभा वर्णन।

कवित्त ॥ गिरिजा पसुनह संग। गंगनह झलक अलक जल ॥
भूतन प्रेत पिचास। [2]नयन नह त्रतिय गरल गल ॥
कटिन बंधि गज चर्म। [3]पहरि अँग अंग दिगंबर ॥
नह गनेस षट बदन। पुत्र गननंदि भंग सुर ॥
नहविय लिलाट पट तिलक ससि। व्याल न माल बनाइ उर ॥
नाहिन त्रिसूल त्रिपुरारि पल। नह कर लग्गिय धवल धुर ॥
छं० ॥ १२६ ॥

(१) ए. कृ. को.-फरिक। (२) ए. कृ को.-नयन। (३) मो.-पहिर अंग अंगनि वर।

मुनि का छद्मवेषधारिणी योगिनी को सादर आसन देकर बातें करना।

बहु आदर आदरिय। [1]अरघ आतिथि तिहि दिन्नौ ॥
करिय ग्यान गुन गोष्ट। कष्ट बहु तप करि किन्नौ ॥
डुल्लिग इंद्र रबि चंद्र। इंद्र सुर लोकह मानिय ॥
मो अग्गै कर जोरि। देव सब तजत गुमानिय ॥
तब्बह सु ग्यान मन उप्पज्यौ। देव दुषी करि सुष लह्यौ ॥
चिदनंद ब्रह्मपद अनुसरिय। धरिय ध्यान [2]गगनह रह्यौ ॥
छं० ॥ १२७ ॥

तपसी लोगों की क्रिया का संक्षेप प्रस्तार वर्णन।

दूहा ॥ मात गरभ आवागमन। मेटि [3]भ्रमन संसार ॥
ज्यौं कंचन कंचन मिलै। पय पय मझ्झ संचार ॥ छं० ॥ १२८ ॥
सोइ ग्यान तुम सों कहौं। निरगुन गुन विस्तार ॥
बरन्यौ वंपु बैराट हरि। जा मुंनि लहै न पार ॥ छं० ॥ १२९ ॥
पद्धरी ॥ कहौं ग्यान मंतं सुमंतं विचारौ। गहौं अद्ध मूलं उरद्धं संचारौ ॥
धरौं ध्यान नासा चिदानंद रुपं। चिकुट्टी [4]चिलोकी स्वयं जोतिरुपं ॥
छं० ॥ १३० ॥
पियों बंकनालं चढ़ै दंड भेरें। सुनै सद्द अनहद्द अनहत्त टेरें ॥
धुनी अंतरं जोति जानौ गियानी। जपै मंच हंसं सु सोहं विनानी ॥
छं० ॥ १३१ ॥
सरं नाभि मूलं सरोजं प्रकासै। दलं अष्ट [5]पद्मं तहां सो उहासै ॥
तपत्तं कनक्कं चरन्नं [6]झलक्कै। दसं अंगुलं नालि हिरदै ढलक्कै ॥
छं० ॥ १३२ ॥
जिमं पुण्फ कल्ली तिमं कंज फूलै। करै जोग उद्धं धरै वाय मूलै ॥
तहां देव अंगुष्ट मानंत वासै। धरै अष्ट वाहं बसै देव बासै ॥
छं० ॥ १३३ ॥

(१) मो.-अरघ। (२) मो.-गगनं। (३) ए. कृ. को.-त्रिभ्रमन।
(४) मो.-त्रलोकं। (५) मो.-संतं। (६) ए.-चैलक्कै।

दलं अष्ट कंजं सु रुद्रान देवं। रहै मध्य भानं अलष्यं अछेवं ॥
रहै भान मध्ये ससी सो निरत्तं । ससी मध्य अग्नी रहैं रूप रत्तं ॥
छं० ॥ १३४ ॥

सु ज्वाला मई तेज तामें विराजै । तहां पिट्ठ सिंघासनं देव साजै ॥
रतन्नं जरे बज्र [1]कोटीस कोटी । तहां देव नाराइनी जोति मोटी ॥
छं० ॥ १३५ ॥

[2]भ्रगं लच्छिनं वक्ष कौस्तुभ्भ सोहै । धरै चक्र पद्मं गदा कंबु रोहै ॥
धरैं [3]पानि षग्गं धनुं [4]वान सल्लं । इसौ ध्यान दिष्षौ महा जोग बल्लं ॥
छं० ॥ १३६ ॥

महा पद्मकोसं परागंति तासी। महा उज्जलं कांति फटिकं प्रभासी ॥
तहां सूर कोटी ससी कोटि सीतं । वयं वाय कोटी मृदं नाच नीतं॥
छं० ॥ १३७ ॥

[5]क्रितं सेत त्रनं [6]अरक्तं सु त्रेता। जुगं द्वापरं पीत कलि कृष्ण [7]नेता ॥
निराकार देवं अकारं सु ध्यानं । रहै आप आपं गुरुं पच्छि थानं ॥
छं० ॥ १३८ ॥

अछेदं अभेदं प्रमानं न मानं । अकासं न वासं न जानं पुरानं ॥
न रूपं निरूपं अरूपं समथ्यं । रहै [8]सास मैवास करिदेह रुथ्यं ॥
छं० ॥ १३९ ॥

कह्यौ रूप बैराट गुरु जौ बतायौ। जिसौ अरजुनं कृष्ण भारथ [9]सुनायौ॥
महाकास सीसं चरंनं पतालं । कटी नाभि सुर्गं दिसा बाहु पालं ॥
छं० ॥ १४० ॥

द्रुमं रोम उद्रं समुद्रं सु इभ्भं । गिरं अस्त नैनं ससी [10]सूर नभ्भं॥
नदी तास नारी महा [11]प्रान प्रानी । कहै देव बेदं [12]न जानंत जानी॥
छं० ॥ १४१ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-सूरं । (२) ए. कृ. को.-श्रियं । (३) ए. कृ. को.-सांग ।
(४) ए. कृ. को.-मुमुल्लं । (५) ए. कृ. को.-प्रभा ।
(६) मो.-अनुक्तं सुनेता, ए.-अरस्तुं । (७) मो.-त्रेता ।
(८) ए. कृ. को.-साम । (९) ए. कृ. को.-वनायौ ।
(१०) ए. कृ. को. सूर । (११) ए. कृ. को.-बाहु । (१२) ए. कृ. को.-जनानं न

जगै रैंनि दीहं महा जोग जोगी। विराटं सरूपं कहै भोग्य भोगी॥
निराकार आकार दोऊ बिमायो। कहै देव औतार गुर जो बतायौ॥
छं० ॥ १४२ ॥

अप्सरा की सगुन उपासना की प्रशंसा करना।

दूहा ॥ मन मानै सोई भजहु। काह तजहु तुम देह ॥
सुरति प्रीति हरि पाइयै। उर मेटहु संदेह ॥ छं० ॥ १४३ ॥
सुरग बसै फिरि धर बसै। मनो ग्यान मन ईस ॥
गरभ दोष मेटहु प्रबल। उर धरि ध्यान जगीस ॥ छं० ॥ १४४ ॥

दसों अवतारों का संक्षिप्त वर्णन।

दूहा ॥ कहै ब्रह्म अवतार दस। धरे भगत हित काज ॥
रूप रूप अति दैत्य दलि। द्रुपद सुता रषि लाज ॥ छं० ॥ १४५ ॥

कवित्त ॥ मच्छ कच्छ बाराह। अप्प नरसिंह रूप किय ॥
वामन बलि छलि दान। राम छिति छत्र छीन लिय ॥
लंकपती संहर्यौ। उभय बलदेव हलायुध ॥
दयापाल प्रभु बुद्ध। रहे धरि ध्यान निरायुध ॥
कलि अंत कलंकी अवतरहि। सत्य भ्रम्म रष्षन सकल ॥
करि सरस रास राधा रमन। भवन ग्यान ब्रह्मह अकल ॥ छं० ॥ १४६ ॥

अप्सरा का कहना कि परमेश्वर प्रेम में है अस्तु तुम प्रेम करो।

दूहा ॥ कपट ग्यान मुष उच्चरै। मन छल धूत अधूत ॥
कपट रूप कंठीर कर। चरन चित्त अवधूत ॥ छं० ॥ १४७ ॥
इह कहि छल संध्यौ तिनह। मै बिन प्रीति न होइ ॥
हर छल तजि हर रूप करि। मान प्रगट्टिय सोइ ॥ छं० ॥ १४८ ॥

नृसिंहावतार का वर्णन।

कवित्त ॥ पीत बरन कज्जलीय। छोह आरोह सरप जंतु ॥
दसन सु तिष्ष कुदाल। नयन विय वज्र धर्‍यौ तनु ॥
बज्र बंक अंकुस गयंद। नष कुंभ विदारन ॥

उद्ध केस॰कग सद्द। गरब दंती 'दल गारन॥
धर पटकि पूंछ मुंछल छल। पीठ दिठ्ठ अवधू पऱ्यौ॥
भय भीति कपि कामिनि कुटिल। धाय विप्र अंकह भऱ्यौ॥
छं०॥ १४९॥

मुनि का कामातुर होकर अप्सरा को स्पर्श करना।

दूहा॥ उर उरोज लग्गत सु मुनि। सर सरोज हति काम॥
रोमंचित अंग अंग सिथल। मन मोह्यो सुरवाम॥ छं०॥ १५०॥
दिष्षत अप्छरि अष्ट उन। रह्यौ नैन मन लाइ॥
देह भुलानो नेह कै। और न सूझै काय॥ छं०॥ १५१॥
भ्रमन भयानक सुपन छल। सिंघन अवधू संग॥
जानिक पंष परेवना। करि डँवरू इन अंग॥ छं०॥ १५२॥
कामजारि सिव भसम किय। कर विभूत रति सोक॥
भोग भुगति रति सुंदरी। द्रिढ़ नह जोग न जोग॥ छं०॥ १५३॥

अप्सरा का कहना कि ऐसा प्रेम ईश्वर से करो मुझसे नहीं।

गाथा॥ वनिता वदंत विप्पं। जोगं जुगति 'केन कम्मायं॥
स्यामा सनेह रमनं। जनमं फल पुन्न दत्ताइं॥ छं०॥ १५४॥

उसी समय सुमंत के पिता जरज मुनि का आना।

दूहा॥ चित्त चल्यो मन डगमग्यो। रच्यौ रूप रस रंग॥
आनि पहुंतो जरज रिषि। दहो भात ज्यों डंग॥ छं०॥ १५५॥

मुनि का लज्जित होकर पिता की परिक्रमा पूजनादि करना।

अरिल्ल॥ पहर एक पर निठ्ठ। जगाइय अप्प गुर॥
भौ लज्जा लवलीन। विचारत अप्प उर॥
जाइ सु पत्तो तात। सु नैनन भेट्यौ॥
भेट्यो अंगन अंग। अनंगह षेदयो॥ छं०॥ १५६॥
दूहा॥ देषि तात परदच्छ फिरि। भय लज्जा लवलीन॥
षिमा अरथ तप रंभ कै। काम कामना भीन॥ छं०॥ १५७॥

(१) मो.-लग्गरन। (२) मो.-कवन।

जरज मुनि का अप्सरा को शाप देना।

पहचानी रिषि सुंदरी। कुस ग्रहि कीनौं दाप॥
भ्रगुटि बंक रिस नैन रत। दिय अच्छरी सराप॥ छं०॥ १५८॥
हम रिष्षीसर बन बसत। रसह न जाने एक॥
कंद भषत तन कष्ट करि। लेह्र श्राप इक मेक॥ छं०॥ १५९॥

सुमंत का लज्जित होना और जरजमुनि का उसे धिक्कारना।

कवित्त॥ नयनं चकित दुत्र बाल। भाल भ्रकुटी दिषि तातह॥
गयौ बदन कुमिलाइ। जानि दीपक लषि प्रातह॥
पुच कवन तप तप्यौ। भयौ बसि कामं वाम रत॥
इनहि श्राप करौं भस्म। कवन छंडैष तोहि हित॥
वपु क्रोधवंत रिषि देषि करि। रंभ अरंभ न कछु रह्यौ॥
सम अग्नि रूप दिष्षीस रिषि। तबह श्राप रंभह कह्यौ॥छं०॥१६०॥

जरज मुनि के शाप का वर्णन।

कलह [1]करनहो इहि कुबुधि। कलहंतर कहि एह॥
पुहची भार उतारनह। जनमि पंग कै ग्रेह॥ छं०॥ १६१॥
कवित्त॥ [2]एम छल्यौ चयवार। रोस करि श्राप श्राप दिय॥
मृत्य लोक अवतार। नाम तुत्र कलहप्रिया किय॥
इन अवधू मन छल्यौ। सुष्पंनन लहहि चीय तन॥
पित पति कुल संहरहि। पीय तो हथ्थ रहै जिन॥
जैचंदराइ कमधज्ज कुल। उअर जुन्हाइय पुच छल॥
संजोग नाम प्रथिराज बर। दुत्र सुमार अनभंग दल॥छं०॥१६२॥

अप्सरा का भयभीत होकर जरजमुनि से क्षमा प्रार्थना करना और मुनि का उसे मोक्ष का उपाय बतलाना।

दूहा॥ श्रवन सुने रंभह डरिय। रही जोर कर दोइ॥

(१) ए.कृ. को.-करनहि। (२) ए.-एक।

अब सांई अपराध मुहि। मुगति कहो कब होइ ॥ छं० ॥ १६३ ॥

पद्धरी ॥ कर जोर करत बीनती रंभ। [1]साष्यात रूप तुम सम सु ब्रह्म ॥
संसार रूप साइर समाज। कट्टनह पार तुम तहं जिहाज ॥
छं० ॥ १६४ ॥

[2]पाली सु भ्रम्म रिषि क्रम्म जोग। चै काल क्रम्म षट रहत जोग ॥
अबला अवध्य हम अंग आहि। कहि क्रोध देव क्यों करिय ताहि॥
छं० ॥ १६५ ॥

उद्धार होइ सो कहो देव। तुम चरन सरन नहिं और सेव ॥
सु प्रसन्न होइ रिषि कहिय एह । अवतार लेहु पहुपंग गेह ॥
छं० ॥ १६६ ॥

तुम काज जग्य आरंभ होइ। जैचन्द प्रथी दल दंद [3]दोइ ॥
भुम्मीय भार उत्तार नारि। फुनि सर्गलोक कहि तोष [4]व्यार ॥
छं० ॥ १६७ ॥

इह कहि रु रिष भय अप्प थान। दुष पाइ रंभ बैठी विमान ॥
गइ सुरग लोग सब सषिन संग। [5]कुमिलाइ बदन मन मलिन अंग॥
छं० ॥ १६८ ॥

अप्सरा के स्वर्ग से पात न होने का प्रकरण। तीनों देवताओं का इन्द्र के दरबार में जाना और द्वारपालों का उन्हें रोकना।

कवित्त ॥ एक दीह बर इंद्र। रमन क्रीड़ा अधिकारिय ॥
ता देषन चयदेव। ब्रह्म, सिव, विष्णु सुधारिय ॥
ए चलंत तिन थान। इंद्र दरवानति रुक्कै ॥
मूढ़ मत्ति जानिय न। दैव गत्ती गति पक्कै ॥

(१) ए. कृ. को.-सक्षात रंभ। (२) ए. कृ. को.-पालो।
(३) ए. कृ. को.-होइ। (४) ए. कृ. को.-यार, पार।
(५) ए. कृ. को.-कुम्हिलाय।

घरि एक तमसि तामस तिहुन। बहुरि घात सुर उब्बरिय ॥
जानेन काल न्निमान गति। तिन विधान विधि संचरिय ॥छं०॥१६९॥

विष्णु का सनत्कुमरों के शाप से पतित द्वारपालों की कथा कहना।

विधि न जंपि आभम्म। इंद्र दरवान न जानिय ॥
सुक सनकादि सनक्क। सनंद सनातन [1]न्वानिय ॥
ए दरवान अबुद्ध। लच्छि रोकिय परिमानिय ॥
सनत सनंदन देव। [2]मुनौ व्रत आदि भिमानिय ॥
ए कुंअर पंच पंचो हटकि। पंच बाल पंचौ प्रक्रति ॥
रिषि बर न होइ तामस कबहुँ। सो ओपम कवि राज मति ॥
छं० ॥ १७० ॥

गाथा ॥ हटकि सु अग्रप्रमानं। अन्नानं साध दारूनो बरयं ॥
ज्यों रिषि नाम समथ्थो। तामसयं द्वार पालक्कं ॥ छं० ॥ १७१ ॥

माटकं ॥ स्याम स्यामय स्याम मूरति घंनं, उद्यापितं बुदबुदौ ॥
नारेपं नासेष उच्चत ननं, दीघं न रुपं [3]वरं ॥
नंमाया चलयं बलेति किरिया, एकस्य जोती तहं ॥
बैकुंठं गुरू मुक्ति धामति धरं, नापत्ति नो तावहुं ॥ छं० ॥ १७२ ॥

दूहा ॥ मापत्ते रिषि यान तिन। दै सराप तिन वार ॥
हरि विरोध तो सद्धि है। तो सध्यौ करतार ॥ ॥ छं० ॥ १७३ ॥

पद्धरी ॥ पाधरी छंद बरनंत मुभ्भ। [4]वस्वरन बीर कल बरन रुभ्भ ॥
अवतार एक एकह प्रकार। ससिपाल दंत [5]वक्रह विधार ॥
छं० ॥ १७४ ॥

अवतार दुतिय जौ कह्न मंडि। अवतार क्रिष्ण गोकुलह छंडि ॥
तिंन काज क्रिष्ण अवतार कौन। भूभार हरन अवतार लीन ॥
छं० ॥ १७५ ॥

(१) ए. कृ. को.-न्यारी।　(२) ए. कृ. को.-मुनि।　(३) मो.-परं।
(४) ए. कृ. को.-वलवीर वीर कल बलन रुझ्झ।　(५) मो.-चक्रह।

अवतार दुतिय चयबर विरोध। राजह्न जग्य सुत भ्रम्म सोध॥
अवतार दुतिय हिरनाकुसस्स। हरिमेव कुस्स विय बंध [1]गस्स॥
छं०॥ १७६॥

नरसिंह सिंह अवतार किन्न। मानुच्छ सिंह नन देव भिन्न॥
छायान घाम [2]नन सस्त्र [3]घाय। सिव को प्रसाद लीनौं [4]सुचाय॥
छं०॥ १७७॥

भरभरिय भार वर पच्च काज। रामहति राम जंपै विराज॥
छं०॥ १७८॥

हिरणाक्ष हिरनाकुश बध।

दूहा॥ हरी लच्छि हरनंकुसह। दुग्र [5]बिजुद्ध किय देव॥
एकं त्यों पाताल प्रति। एक थंभ प्रति सेव॥ छं०॥ १७९॥

गाथा॥ सो पिष्भियं प्रहलादं। किं थंभं मझ्झयौ भनई॥
जंजं थानन हुत्तौ। तौ किन्नौ थंभयं भारं॥ छं०॥ १८०॥

दूहा॥ थंभ भार फुट्यौ सुबर। नष हति घाम न छाह॥
बर सिंघासन बैठि कै। बर बैकुंठह जांह॥ छं०॥ १८१॥

रावण और कुम्भकरण बध।

साटक॥ राजा रामवतार रावन [6]बधं, कुंभ हत्तौ कर्नयं॥
सीतायं प्रति बोधितं प्रति [7]लतं, प्रत्यंग [8]प्रत्यंगितं॥
सा राजं प्रतिराज राज कपितं, चौकूटयं कूटजं॥
जंहल्लौ धर धार उप्पम कवी, चक्रीय चक्रं फिरं॥ छं०॥ १८२॥

गाथा॥ यों उड्डा कपि कंक। प्रव तर गाम प्रस्थरं लोयं॥
जिम घर सराय थानं। उड्डै सा भाजनं मुक्ति॥ छं०॥ १८३॥

दूहा॥ यों उड्डी लंका सुधर। चिया बैर प्रतिपाल॥
हर बंदे गोबिंद कथ। बर बैकुंठह हाल॥ छं०॥ १८४॥

(१) मो.- कस्स। (२) मो.-तन। (३) ए. कृ. को.-पाय।
(४) मो. सुभाय। (५) मो.-सु।
(६) मो.-विधं। (७) मो.-लनं। (८) ए. कृ. को.-प्रसंगिनं।

त्रिदेवताओं के पास इन्द्र का आप आकर स्तुति करना।

चौपाई ॥ सो बोल्लिय इंद्रह परदारं। हरि रक्यौ तिय देव सँसारं ॥
सुनि सु इंद्र अस्तुति बर कीनिय। चरन सुरज बर सीस सु दीनिय ॥
छं० ॥ १८५ ॥

भुजंगी ॥ तुहीं देवता देवतं विष्णु रूपं। किते इंद्र कोटं नचै कोटि रूपं ॥
नचें कोटि ब्रह्मं रबिं कोटि तेजं। ससी कोटि सीतं सुधा राज सेजं॥
छं० ॥ १८६ ॥

किते कोटि जं कोटि से दुष्ट ढाहे। किते कोटि कंदर्प्प लावन्य लाहे॥
किते कोठि सामुद्र म्रज्जाद दिद्धिं। किते कोटि कल्पं तरं मुक्ति सिद्धं॥
छं० ॥ १८७ ॥

वलं कोटि पोनं द्रिगं कोति भारी। तुहीं तारनं तेज संसार सारी ॥
तुही विष्णु माया अमायात तूहीं। तुहीं रत्ति दीहं तुही तेज जूही॥
छं० ॥ १८८ ॥

तुहीं तू तुहीं तू तुही सर्व भूतं। तुहीं आदि अंतं तुहीं मध्य हूतं॥
जहां हूं न हूं तूं तहां तूं न नाहीं। गनों हूं न देहो रहै तूं समाहीं॥
छं० ॥ १८९ ॥

तुंही ताप संताप [1]आत्ताप तूंही। कह्यौ इंद्र लग्यौ चरंनं समूंही ॥
छं० ॥ १९० ॥

इन्द्रानी का त्रिदेवताओं का चरण स्पर्श करना।

दूहा ॥ कहि रु इंद्र सचीव सों। पय लग्यौ त्रय देव ॥
हरिचरनन छुंडै नहीं। लोहरु चंमक भेव ॥ छं० ॥ १९१ ॥

स्लोक ॥ कोटि सक्र विलासस्य। कोटि देव महावरं ॥
इंद्र ध्यानं समो सिंघो। [2]पंचाननस्य राजयं ॥ छं० ॥ १९२ ॥

अप्सराओं का नृत्य गान करना और शिव का उक्त अप्सरा को शाप देना।

(१) ए. कृ. को.-अत्तातु, अतात। (२) मो. गजाननस्य।

दूहा ॥ लै आई रंभा सवन। अट्ठ परी संग साज ॥
हाहा हूहू मुंग सजि। रु गुन गंध्रव गाज ॥ छं० ॥ १६३ ॥

चोटक ॥ गुन ग्रंध्रव गंध्रव लीन गुनं। इति चोटक छंद प्रमान सुनं ॥
सहतें बरनं बरनं रति राजं। नचै गुन अप्छरि अप्छरि काजं ॥
छं० ॥ १६४ ॥

रचै बर इंद्रति इंद्रह साज। .... ॥
लई पहु पंजलि वाम प्रकार। जपं जय इंद्र तियं जपि त्यार ॥
छं० ॥ १६५ ॥

घिज्यौ सुनि शंकर देव प्रकार। तजै चय देव कह्यौ इँद्र सार ॥
कह्यौ गुन मंत गनेस प्रकार। भयौ तहं शंकर आप सु सार ॥
छं० ॥ १६६ ॥

पतंन पतंन कह्यौ तियवार। परै प्रति भूमि भयंकर सार ॥
छं० ॥ १६७ ॥

अप्सरा का शिव से अपने उद्धार के लिये प्रार्थना करना।

दूहा ॥ गहि चरन्न मुकै न हरि। रंभ कंपि इन भाइ ॥
मांनौ चल दल पत्तसौ। छीन वाइ विरुझाइ ॥ छं० ॥ १६८ ॥

गाथा ॥ कहु कब मुज उद्धारं। सुद्धारं कव्वयं होइँ ॥
तो पत्ती प्राकारं। इद्रं चरन कब्बु सेवाइं ॥ छं० ॥ १६६ ॥

उपरोक्त अप्सरा का स्वर्ग से पतित होकर कनोज के राजा के घर जन्म लेना।

कवित्त ॥ सुनहि रंभ पहुपंग। पुचि बर ग्रेह देव गुर ॥
बर कनवज्ज प्रमान। गंग अस्नान सार कर ॥
इंद्र मरन बंछई। गँग स्नान जिय काजं ॥
ता कारन तुहि चीय। आप सुध्धौं गुन भाजं ॥
पहुपंग ग्रेह जनमिय तदिन। तिय स्नराय तरुनिय भइग ॥
आरंभ विनेमंगल पढ़न। तदिन महूरत बर लइग ॥ छं० ॥ २०० ॥

कन्नौज के राजा विजयपाल का दक्षिण दिशा पर चढ़ाई करना।

कनवज्जह कमधज्ज। राज विजपाल राज बर ॥
हय गय नर बर भीर। सकल किय सेन जित्त पर ॥
बीर धीर बर सगुन। भार उद्धार महामति ॥
मत्तिराम चितविद्य। बीय [१]रंमाधि राज रति ॥
संचर्‍यौ सेन सजि विजै नग। सकल जौति भर राज धर ॥
मुरवस्थ दिस्य न्रप संग किय। क्रम्यौ [२]देस दछिन सुधर॥ छं०॥२०१॥

समुद्र किनारे के राजा मुकुंद देव सोम वंशी का विजयपाल को अपनी पुत्री देना।

सोम बंस राजाधिराज। मुक्कंद देव प्रभु ॥
सरित समुद्र सुतटह। कटक नय मग्गि न्रयन नभु ॥
तीस लष्य तोषार। लष्य गैंवर गल गज्जहिं ॥
दसह लष्य पयदलह। पुलत दंस छचति रज्जहिं ॥
दिव दिवस रीति मंचह जपति। जगन्नाथ पूजत दिनह ॥
दिगविजय करन विजपाल न्रप। सपत कोस भिर्‍यौ तिनह॥
छं० ॥ २०२ ॥

मुकंद देव की पुत्री का जयचंद के साथ व्याह होना।

अति आदर आदरिय। सहस दस दीन गयंदहु ॥
धन असंष घन मुत्ति। [३]रतन घट समुनि मन्नदहु ॥
सौ प्रजंक रजकंति। कोटि दस पाट पटंबर ॥
दिय पुत्री सु विसाल। दासि सें [४]सत्त अडंबर ॥
परषी सु पुत्ति जयचंद दिषि। सुभ्भ जुन्हाइय आसरिग ॥
बर सबर पंच दंपति दिनह। पानि ग्रहन उत्तिम करिग ॥
छं० ॥ २०३ ॥

(१) ए. कृ. को.-रमादि। (२) मो.-देह स दच्छिन।
(३) ए. कृ. को.-रतन समुनि धन मनिंदह। (४) ए. कृ. को.-सपत।

दूहा ॥ अति सु ललित्त सरूप विय । रमहित राजन संग ॥
इक थार भोजन करहिं । अति सुष न्रपति प्रसंग ॥छं०॥२०४॥

विजयपाल का रामेश्वर लों विजय प्राप्त करके अनेक राजाओं को वश में करना।

परिग देव दच्छिन दिसह । अंग भयौ सुभ देव ॥
सेत बंध अनु सरिय मग । गोवल कुंड संगेव ॥ छं० ॥ २०५ ॥
तोरन तिलंगति बंधि न्रप । विप चढ़ि चिफिर चिकोट ॥
विद्या नैर सुजीति न्रप । सेत समुद्र सत्रोट ॥ छं० ॥ २०६ ॥
नराज । करन्न नाट संकला पनेक भूप राजनं ॥
समुद्द ईषि भूप बंधि मैथिली सु भाजनं ॥
सुचंब कोटि मच्छरी सुरंग राय कुंकनं ।
पुलिंग देश पैं फिरी फिरंग जीति संषिनं ॥ छं० ॥ २०७ ॥
असेर देस षानयं गँभीर गुज्जरी धरं ।
जु मंडवी मलेच्छ नठ्ठ गुंड देस सो धरं ॥
जु मागधं [1]मवन्न सुष्प चंद्रकास नठ्ठयं ।
गुपाचलं गुरावयं प्रकास सोभ पठ्ठयं ॥ छं० ॥ २०८ ॥
सुप्रच्छते प्रकार साध काम कग्गरं मिलं ।
अधंम भ्रम्म सद्द भूमि पंग राज संषिलं ॥ छं० ॥ २०९ ॥
कवित्त ॥ लयौ सुगढ़ सोवन्न । कोट भंज्यौ पर कोटह ॥
गोपाचल गैनंग । चक्कित बज्जी सिर चोटह ॥
सोव्रन गिर सिरताज । तट्ठ लग्गे भग्गे षल ॥
दिय भोरा भीमंग । एक हथ्थी मद सब्बल ॥
दिय सीष कुंअर गज अठ सुबर । मोरा चलि पट्टन भनिय ॥
विजपाल चले दिगपाल चलि । मंडोवर महि अप्पनिय ॥
छं० ॥ २१० ॥

सेतबन्द रामेश्वर के पड़ाव पर गुजरात के राजा के पुत्र का विजयपाल के पास आना और उसे नजर देना।

(१) ए. कृ. को.-मवील ।

दूहा ॥ सेत्रुंजा डेरा सु पहु । लिय रसाल सिधराइ ॥
मानक मुक्तिय दिव्य [1]नग । लै पैलग्गि भोराइ ॥ छं० ॥ २११ ॥
दस कुआव संजावरी । दस षट बानी सिद्ध ॥
हथ्थिय सथ्थिय सीपकिय । रिध दीनी नव निद्ध ॥छं०॥२१२॥

कवित्त ॥ भोरा कुंअर सुं भेट । सिंध लग्यौ तट सागर ॥
लाष दोय बाजी वितंड । नगर भग्ग बहु नागर ॥
सत्त लष्ष तोषार । पंति कनवज्ज प्रमानं ॥
लष सत्तरि गय गुरहि । तपै ग्रीषम जिम भानं ॥
जलथान जाइ धूलग्गि रह । रह्यौ एक बड़वानलह ॥
चहुआन देस तष्षह सुधर । पंच षंड कनवज्ज पह ॥छं०॥२१३॥

दिग्विजय से लौट कर विजयपाल का यज्ञ करना ।

गाथा ॥ किय दिगविजै विहारं । जित्तवि सकल राइ किय संगे ॥
पुर कनवज्ज संपत्तं । बज्जन बहुल बज्जि आनंदं ॥छं०॥२१४॥

दूहा ॥ मंडि जग्य विजपाल न्रप । भूपन तुंग विनास ॥
जय जयचंद विरद्द, बर । हठ लग्गो [2]इतिहास ॥ छं० ॥ २१५ ॥

विजयपाल की दिगविजय में पाई हुई जैचंद की पत्नी को गर्भ रहना और उससे संयोगिता का जन्म लेना ।

अरिल्ल ॥ अति वरजो वा जुन्हाइय नारि । चंद्र जेम रोहनि उनहारि ॥
अति सुष बरस दुअट्ठ प्रमानं । ता उर आनि संजोगिन थानं ॥
छं० ॥ २१६ ॥

दूहा ॥ घटि बढ़ि कल्लह न अनुसरै । पेम सदीरघ होत ॥
कलि कनवज दीपक सुमति । चंद्र जुन्हाई [3]जोति ॥ छं० ॥ २१७ ॥

कवित्त ॥ जिते जुन्हाइय जोति । रीज गंवरी गुर बंध्यौ ॥
जिनं जुन्हाइयं चंद । अष्ट पर्वत वित नंध्यौ ॥

(१) ए. कृ. को.-गन ।
(२) ए. कृ. को.-अतिहास ।　　　　(३) मो.-सौति ।

जिनं जुन्हाइय चंद। तुंग तिरुहन विप्रानय ॥
जिनं जुन्हाइय चंद। कंठ कंठेर सु बानय ॥
जयचंद जुन्हाइय पंगुरै। असी लष्ष हैवर [1]परिग ॥
जयचंद जुन्हाइय राज बर। बरनिय अरधंगह धरिग ॥छं०॥२१८॥

दूहा ॥ पुब्बकथा संजोग की। कही चंद बरदाइ ॥
पंग घरह जुन्हाइ उर। आनि प्रगट्टिय लाइ ॥ छं० ॥ २१९ ॥

इति श्रीकविचंद विरचिते प्रथिराज रासके संजोगिता पूर्व जनम नाम पैंतालिसमों प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ४५ ॥

(१) ए. कृ. को.-परिग।

इस पृष्ठ (१२५९) में संयोगिता के जन्म का संवत् जो ११३६ दिया है वह ११३३ चाहिए ।

अथ विनय मंगल नाम प्रस्ताव लिष्यते ॥

(छियालिसवां समय ।)

अप्सरा के संयोगता के नाम से जन्म लेकर शाप से उद्धार पाने का वर्णन ।

दूहा ॥ पुब्ब कथा संजोग की । कहत चंद बरदाइ ॥
सुनत सुगंध्रव गंध्रवी । अति आनंद सुहाइ ॥ छं० ॥ १ ॥
जनम संयोग संजोग विधि । कहि कविराज प्रकार ॥
जिम भविष्य भव निरमयौ । तिम सराप उद्धार ॥ छं० ॥ २ ॥

शाप देकर जरज ऋषि का अन्तर्ध्यान हो जाना और सुमंत का तप में दत्तचित्त होना ।

चौपाई ॥ एक सराप षिमा अवतारं । जरित रिष्य हरद्वार सुधारं ॥
तिन सिष सिष्षिं छिमाव्रत लिन्नौ । मनो तत्त [1]रस तत्त सुभिन्नौ ॥

* संवत ११३६ में संयोगिता का जन्म वर्णन ।

दूहा ॥ ग्यारह सै च्यालीस चव । पंग राज ग्रह मंडि ॥
बर पंचम ससि तीय ग्रह । जनम संयोग विषंड ॥ छं० ॥ ४ ॥
ससि न्रिमल पूरन उग्यौ । निसि निरमल अति रूप ।
न्रिप न्रिप कन्या व्याहता । मरन अदब्बुद भूप ॥ छं० ॥ ५ ॥
जंजं बालत पढ़ै गुन । तंतं बढ्ढति काम ॥
सिद्धि [2]विभिंतर तिय सहज । बुद्धि लच्छिन विश्राम ॥ छं० ॥ ६ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-तत्त रस लिन्नौं ।   (२) ए. कृ. को.-विंपतर ।

* छन्द ४ के अंत में बिखण्ड शब्द "संवत ११३६" की सूचना देता है-यथा (वि = दो + खण्ड = टुकड़ा) जनम संयोग-विखण्ड = संयोगता की आयु के आधेआध समय मे अर्थात् संवत् ११४० में राजा पंग ने ... आरम्भ किया ।

संयोगता का दिन प्रति बढ़ना। और आयु के तेरहवें वर्ष में उसके शरीर में कामोद्दीपन होना।

कवित्त बढ़ै बाल जो दीह। घरिय सो बढ़ै स सुंदरि॥
और बढ़ै इक मास। पाष बढ़ै रस गुंदरि॥
मास बढ़ै षटमास। रित्त बढ़ै सु बरष बर॥
बरष बढ़ै सुंदरी। होइ षट मध्य बरष झर॥
पूरंन बाल षट विय बरष। नव मासह दिन पंच बर॥
ता दिनह बाल संजोग उर। मदन हड्ड मंडिय [1]सुधर॥ छं० ॥ ७॥

संयोगता के हृदय मंदिर में कामदेव का यथापन्न स्थान पाना।

इह संजोइय राज। पुत्ति बत्तीसह लच्छिन॥
रची विधाता काम। धाम कर अप्प विचच्छिन्न॥
छाजै छचिय गौष। [2]गुमट कलसा छबि छाजिय॥
करिय रास आवास। सरस रस रंग विराजिय॥
तिन चित्रसाल चित्रत सुरंग। मनसिज आगम अंग अँग॥
मन आस वास बसि मंदिरह। प्रथम दीप दीनौ सुरंग॥ छं० ॥ ८॥

संयोगता के सौन्दर्य्य की बड़ाई।

दूहा॥ उड़गन सम सहचरि सकल। उड़पति राजकुमारि॥
नव रस आए देह धरि। कोन चिया अनुहारि॥ छं० ॥ ९॥

संयोगता का भविष्य होनहार वर्णन।

हनूफाल॥ संजोगि नाम सुजान। जिन तात बिजय क्रिआनि॥
इह लच्छिनेव बतीस। इह अच्छ छत्त विदीस॥ छं० ॥ १०॥
इह उंच ग्रेह समान। भुअ राहनी हत आनि॥
पुन पानि बर चहुआन। जिन बंधिलिय सुरतान॥ छं० ॥ ११॥

(१) मो.-सुदर। (२) ए.-मुगट।

इन काज राजह जग्य । मिलि राइ सहस विभग्य ॥
कलहंत काज सरूप छिति रत्ति श्रोनित भूप ॥ छं० ॥ १२ ॥
इन रूप राचत देव । इन इंद वधु अह मेव ॥
इन सुरन षोड़स दीन । इकतीस लच्छन भीन ॥ छं० ॥ १३ ॥
भौ रुद्र माल विसेष । पर कलह कामिनि लेष ॥
इन संबन्यौ बह राज । भिरि सहस छचिय [1]छाज ॥ छं० ॥ १४ ॥
घटि मुकुट मुकुटनि पान । रवि कोटि उग्गिय जान ॥
मिलि छच छचन धाह । सोइ छांह मंडय बाह ॥ छं० ॥ १५ ॥
सुनि संति [2]सत्तत काज । रन पानि बर भूत आज ॥
इन कलह कामिनि नाम । संसार समनह वाम ॥ छं० ॥ १६ ॥
इन पाइ पौरुष इंद्र । [3]ज्यौं रुषमिनी रु गोविंद ॥
दुज दुजन दुर्जन लाग । सुकं सुनत श्रवन विभाग ॥ छं० ॥ १७ ॥
दस सहस छच विभंग । रुधि भिन्न षोनिय अंग ॥
परि लष्य छचिय जुड्ड । इन बरह किित्ति असुड्ड ॥ छं० ॥१८ ॥
छिति छन्न बंधन व्याह । तिहि सुचर मंडल धाह ॥
वर मिलन वेस विरूप । चढ़ि चलन मनमथ भूप ॥ छं० ॥ १९ ॥
जिहि जियन मरन सु [4]लाह । दुअ नयर मंगल [5]धाह ॥
षट भाष भाषन जान । संजोग जोवन पान ॥ छं० ॥ २० ॥
बंधि षंड राज सुराज । कनवज्ज राजन साज ॥
धम्मारि काम विलास । संजोग रूप प्रहास ॥ छं० ॥ २१ ॥
सुक सुकी केलि विभग । सुनि श्रवंन भव अनुराग ॥
चित विलषि उलषि कुमारि । लगि प्रदन केलि धमारि ॥ छं० ॥ २२ ॥
अस ससिर रिति अत्तीति । पति तात ग्रह छिति जीति ॥
संजोगि वारिय मंडि । दुज दुजन गंध्रव छंडि ॥ छं० ॥ २३ ॥
उअ मेह [6]मोर मराल । पप्पीप सद्द सराल ॥
उअ दष्ष अंबर मंडि । मधु माधुरी सुव छंडि ॥ छं० ॥ २४ ॥

(१) मो.-काज । (२) ए.-संतन ।
(३) ए. कृ. को.-ज्यौं रुषमनी रू गुविन्द । (४) ए. कृ. को.-लार ।
(५) ए. कृ. को.-धार । (६) ए. कृ. को. मोह ।

इहं लग्गि केलि, अहार। तिय ताल तेह सहार॥
इह केतकिय सब छंडि। नव नलिन नागिंन षंडि॥ छं० ॥ २५॥
इय चंद एहं प्रहास। घट एहं मध्य दुवास॥
कनवज्ज राजन मझ्झि। दिस षंड राइ सु मझ्झि॥ छं० ॥ २६॥
स्लोक॥ *अन्यथा नैव पिष्यंति। द्विजस्य वचनं यथा॥
प्राप्ते च योगिनी नाथे। संजोगी तत्र गच्छति॥ छं० ॥ २७॥

संयोगता प्रति जयचन्द का स्नेह।

दूहा॥ सुत्र संयोग [1]समुष्य सुष। दिष्य सभोजन राइ॥
अति हित नित नित्तह करै। तिय रयनी न विहाइ॥ छं० ॥ २८॥
सुअठ्ठ आरि अपनी करै। सरै न सीषह तात॥
पढ़न केलि कलरव करै। कहत अपूरब बात॥ छं० ॥ २९॥
नेवज पुप्फ सुगंध रस। बज्जन सह सुढार॥
सुरति काम पूजन मिलहि। एक समै चयवार॥ छं० ॥ ३०॥

संयोगिता के विद्यारम्भ करने की तिथि आदि।

पद्धरी॥ ससि तीय थान रवि भोग जोग। दिन धर्यौ देव पंचमि संजोग॥
संजोग बहुत उर पढ़न गत्ति। दिन धर्यौ देव राजन सु मत्ति॥
छं० ॥ ३१॥
दूहा॥ अति विचित्र मंडप सुरंग। अंगन [2]सस सहकार॥
अध सु लाल कूंअरि पढ़त। सद्रिस प्रतंम सु मारि॥ छं० ॥ ३२॥
पढ़त सु कन्या पंगजा। सुंदर लच्छिन रूप॥
मानहु अंदर देषियै। मदन पचासन भूप॥ छं० ॥ ३३॥
लहु भगिनि तारा सुअन। अति सु चंग प्रति रूप॥
जिन जिन भेद अभेद गति। जं जं मंडहि धूप॥ छं० ॥ ३४॥

संयोगता का योगिनी वेष धारण कर अपनी पाठिका (मदन वम्हनी) के पास जाना।

* इस श्लोक की प्रथम पंक्ति के आगे मो. प्रति के पाठ का एक पत्रा खंडित है।
(१) को.-संमुष्य सुख। (२) ए.-तस।

अरिल्ल ॥ ए लज्जा सों लज्जहि बाल। दिगंबरह वस्त्रं गुन.चालं ॥
जगत वस्त्र सो रामय भोग। वस्त्र रचैं नहिं राचै जोग ॥ छं० ॥ ३५ ॥

योगिनी वेष में संयोगिता के सौन्दर्य्य की छटा वर्णन।

दूहा ॥ सो रष्षी सुंदरि सु बिधि। मदन दृष्ठि दियं हथ्थ ॥
सो कीनी मदनं सुदृष्ठि। अति कोविद गुन कथ्थ ॥ छं० ॥ ३६ ॥

कवित्त ॥ अति कोविद गुन कथ्थ। मदन कीनी भंति दृढह ॥
जोग जिहाजन जाइ। ताहि जल मंडित सद्दह ॥
अति भय मित्तिय बाल। रूप राजति गुन साजति ॥
आभूषन षट धरै। देव बड्डू द्रिषि लाजति ॥
आरंभ अंबता धाम मधि। अति विसुद्ध चिहु पास सषि ॥
संजीव जोग जंगम सवै। तप सुतप्प मध्धा सु लिषि ॥ छं० ॥ ३७ ॥

संयोगिता का लय लगा कर पढ़ना और पाठिका का उसे पढ़ाना।

दूहा ॥ लय लग्गिय भग्गीय गुन। अति संदर तिन साथ ॥
एक मत्त दस अग्गरियं। विनय पढ़ावत गाथ ॥ छं० ॥ ३८ ॥
इक सत पंचत अग्गरी। राज कन्य रज.रूप ॥
तिन मध्ये मध्यात में। काम विराजत भूप ॥ छं० ॥ ३९ ॥
तादिन तें द्वै दुजन बर। पढ़िय सु शास्त्र विचार ॥
उन आरंभ अरंभ करि। आप सपत्तिय बार ॥ छं० ॥ ४० ॥

एक दिन ब्राह्मणी का अपने पति से संयोगिता के विषय में प्रश्न करना।

आय सपत्तिय बाल बर। बेदिषि चष सह बाल ॥
मानौ रस अलि अलिनि कौ। लै आयहु ग्रह काल ॥ छं० ॥ ४१ ॥

(१) ए. कृ. को.-सद्धिय। (२) ए. कृ.-वसे।

पढ़ि संजोग संजोग हत । विजय सु देवह दाव ॥
चकह चक्र सु बेन ग्रस । दिषि संजोग अनहाव ॥ छं० ॥ ४२
जाम एक निसि पच्छिली । दुजनिय दुजबर पुच्छि ॥
प्रात अप्प घर दिसि उड़ै । जे लच्छिन कहि अच्छि ॥ छं० ॥ ४३ ॥

ब्राह्मण का संयोगिता के भविष्य लक्षण कहना ।

कवित्त ॥ इन लच्छिन सुनि भाल । न्त्रिपति करि रुधिर प्रकारह ॥
बहु छत्रिय झुझिहैं । रुंड हरि हार अधारह ॥
गिद्ध सिद्ध वेताल । करै हत्यह कोलाहल ॥
इह लच्छिन सुनि सच्च । वाल लच्छित जिन चाहल ॥
संजोग फूल फल नन दियन । ए कन्या जिम प्रथम तिम ॥
कलहंत राज छची सुबर । भविस बात होवै सु तिम ॥ छं० ॥ ४४ ॥
दूहा ॥ तिन कारनहों जक्ष गुन । भुगति मुगति सह देन ॥
सो कन्या पहुपंग कै । आय सपत्तिय मेन ॥ छं० ॥ ४५ ॥
जयति जग्य संजोग बर । दिषि अंगन लष चार ॥
एक अलष्पन भिन्नहै । सो कलहंतर साल ॥ छं० ॥ ४६ ॥
कलहंतरि सुंदरिय बर । अति उतंग छिति रूप ॥
तिन समान दुज पिष्य कै । मदन लभ्भ तन भूप ॥ छं० ॥ ४७ ॥
गीतामालची ॥ लषि लषित अच्छिर, सषिन सच्छिर, नमित गुरजन, अंगुरं ।
लहु गुरु सुमंडित अगन छंडित, दूह गाह, समुद्दरं ॥
सक सगन संचित, अगन बंचित, जगन मगन, प्रबंधयं ॥
उग्गाह गाह, विगाह चंचल, नष्ट निहपल, छंदयं ॥ छं० ॥ ४८ ॥
छिति छच बंधति, चित्त बित्त, सु नगन निंधति, अभयं ॥
हरि हरय अंसय, विमल वंसय, रूप गंसय, अंसयं ॥
सुभ अलस साटक, काम हाटक, भाष घटक सु सचयं ॥ छं० ॥ ४९ ॥
संजोग जोगय, सुमति भोगय, थप्पि जोगय, भोगयं ॥
इन काल विद्धं सब्ब सिद्धं, एक दोष संजोगयं ॥

(१) को.-सूल । (२) को.-लगन ।

मय मंत मंतिय, कांम कंतिय, विज्ज जंतिय उच्चयं ॥
जं कहै अच्छरि, पढ़ै तच्छिर, लिपै नच्छिर, मंडियं ॥
छं० ॥ ५० ॥
पाषान लीहं, दीह तीहं, काम सीहं विच्छुरै ॥
कवि करै कित्तिय, मत्ति इत्तिय, जीह तित्तिय; उच्चरै ॥
छं० ॥ ५१ ॥

संयोगिता का मदन वृद्ध ब्राह्मणी के घर पढ़ने जाना और संयोगिता का योवन काल जान कर ब्राह्मणी का उसे विनय मंगल पढ़ाना।

कवित्त ॥ मदन वृद्ध बंभनिय। ग्रेह हिंडोल संजोगिय ॥
कनक डंड परचंड। इंद्र इंद्रिय बर जोइय ॥
परहि लत्त हिंडोल। दुजन उप्पम तिन पाइय ॥
कनक षंभ पर काम। चंद चकडोल फिराइय ॥
लग्गे नित्तंब बेनिउ[1] बढ़ि। सो कवि इह उप्पम कही ॥
सैसव पयान कै करतही। कामय[2] वग्गी कर गही ॥ छं० ॥ ५२ ॥
अरिल्ल ॥ पुत्त अंब कदंब कुरंगा। तै किरपल पछै अनभंगा ॥
चक्रित बत्त सुनि बाल प्रकारं। सह संदरि सोभत सिरदारं ॥
छं० ॥ ५३ ॥
दूहा ॥ सजि सु पंग बर व्याह क्रत। बहु रचना गुन लाहु ॥
बाल सु वय जिम बाल मुन। त्यों समुझै गुन चाह ॥ छं० ॥ ५४ ॥
कवित्त ॥ एक सु पुत्तिय पंग। देव दछिन देव्रग्रह ॥
मेनहीन माननी। हीन उपजै अरंभ कह ॥
मनमोहन मोहनी। निगम करि बत्त प्रकारं ॥
आसमान इंष्यियै। नाग नर सुर नहिं[3] भारं ॥
अष्यौ उमाह मंगलविनय। ध्रम्म सकल जिम मुगति मति ॥
सुनि मत्ति गत्ति रत्तियं सुबर। विधि विधान निरमान गति ॥
छं० ॥ ५५ ॥

(१) ए. कृ.-बेनी उवटि। (२) ए. को.-काम अवंगी। (३) ए.-नारं।

अथ विनय मंगल पाठ का प्रारम्भ ।

वचनिका ॥ मदन हंस बंभनी संजोगिता कों बिनय मंगल
पढ़ावति है सु कैसो बिनय मंगल ॥

दूहा ॥ सुकल पच्छ बंभनि सुकल । सुकल सु जुवति चरित्त ॥
बिनय विनय बंभनि कहै । विनय सु मंगल वृत्त ॥छं०॥५६॥
* मुगध [1]मुद्ध प्रौढ़ा प्रकति । सुबर बसीकर चित्त ॥
सुनि विचित्त बाला विनय । श्रवन सवद्दिन चित्त ॥ छं० ॥ ५७ ॥

विनय मंगल की भूमिका ।

चोटका ॥ प्रथमं उठि प्रात मुषं दरसं । उतमंग सुअंग पयं परसं ॥
विनया गुन तुच्छ विभच्छ मनं । हरहं जय काम सु ताम मनं ॥
छं० ॥ ५८ ॥
ग्रह गामिय रेनि परप्परसं । प्रगटी तय भावन ताम रसं ॥
द्रिग द्रप्पन लेह बदन्न [2]हसं । प्रति प्रीतय चारु चषं दरसं ॥
छं० ॥ ५९ ॥
भय कामिनि काम मनं हतलौ । सिषि नासिष पानि कुअद्धत जौ ॥
मन हत्ति सु गत्ति मनं गहनं । रह रत्त सु व्रत्त बरं बहनं ॥
छं० ॥ ६० ॥
जियथं जिय रस्स रसं रसनं । भरु भीर उहत्त पयं बसनं ॥
परि पिम्मह पिम्म सबक्क कसं । जह ईजह दिष्षित होय [3]ससं ॥
छं० ॥ ६१ ॥
भुगतं बर अंन वरं विनयं । प्रथमं निज काल ग्रिहं गननं ॥
भव रूप चिरूप तनं लहनं । अनि ईस नसीस समं वहनं ॥छं०॥६२॥
अनि पूज न जाप न ईसगनं । पति पूज मनोरथ लभ्भि मनं ॥
पिय दिष्षहि दिष्षि मुगद्ध मनं । वय बढ्ढिय ताम सुकाम बनं ॥
छं० ॥ ६३ ॥
बसनं रुचि पीय सुकीय घरं । तन भंडन भूषत ताम करं ॥

(१) ए.-सुद्ध ।
(२) ए. कृ. को.-इसं ।
(३) मो.-सरसं ।

* यहां से मो.-प्रति का पाठ पुनः आरंभ है ।

गहनं रस सार शृंगार बनं। मति गंठिय ग्रंथ-सु काम मनं॥
छं० ॥ ६४ ॥

इति गत्ति चरित्त जुधाम धरं। सु जितै चिय कंत अधीन करं॥
छं० ॥ ६५ ॥

पति का गौरव कथन।

दूहा ॥ जो बनाय बनिता बनिय। सषी न मंगल माल॥
सषि आग्रह मानै नहीं। पिय छंडै ततकाल॥ छं० ॥ ६६ ॥

उव निम्न बस दूती ग्रहन। [1]सषिन बिलंब न बग्ग॥
पियन पियहि अंतह करन। करहित सुभग [2]अभग्ग॥ छं० ॥ ६७ ॥

धं धीरज विरहै बनह। आलमेछ अप सिद्ध॥
तं तन मन मान न धरहि। करै सु कामह विद्ध॥ छं० ॥ ६८ ॥

स्त्रियों की पति प्रति अनन्य प्रेम भावना।

मुरिल्ल ॥ तूं धनयं मनयं तुअ [3]मत्तिय। तूं हिययं जिययं तुअ गत्तिय॥
तू बरयं धरयं तुअ तत्तिय। तू पिययं नियय निज रत्तिय॥छं०॥६९॥

तूं ग्रहयं नरयं नय नत्तिय। तूं गतयं जपयं जक जत्तिय॥
तूं सहयं वसयं घन घत्तिय। तूं दियय छियय छवि हत्तिय॥
छं० ॥ ७० ॥

तूं सहयं दुहयं दुह कत्तिय। तूं विनयं दिनयं दिन गत्तिय॥
तूं तपयं अपयं अप नत्तिय। तूं सथयं नथयं सथ सत्तिय॥
छं० ॥ ७१ ॥

पाठिका का उपरोक्त व्याख्या को दृढ़ करना।

कवित्त ॥ विलसि भाइ भामिनिय। जाम जामनिय प्रमानहि॥
विलसि काम कामिनिय। ताम तामिनिय प्रमानहि॥
हों सुबंभ बंभनिय। रंभ रंभान सिषावन॥
श्रवन मूढ़ मन मूढ़। रूढ़ रंजन गहि दावन॥

(१) मो.-सखिय। (२) मो.-अभंग। (३) ए. कृ. को.-मुत्तिय।

तन तुंग द्रुग्ग उग्रह हिम सु। सुनि सु बाल हर धवलु [1]हन ॥
चंदनह चारु चंदन कुसुम। तन चिषान चिग्गुन पवन ॥छं०॥७२॥

विनय भाव की मर्य्यादा गौरव और प्रशंसा।

जुगति न मंगल बिना। भुगति बिन शंकर धारी ॥
मुगति न हरि बिन लहिय। नेह बिन बाल हथारी ॥
जल बिन उज्जल नथ्थि। नथ्थि न्विमान ग्यान बिन ॥
कित्ति न कर बिन लहिय। छित्ति बिन सस्त्र लहिय किन ॥
बिन मात मोह पावै न नर। बिनय बिना सुष ग्रसित्त तन ॥
[2]संसार माह विनयौ बड़ौ। विनय बयन मुहि श्रवन सुनि ॥
छं० ॥ ७३ ॥

सुआ सार विनय का एक आख्यान वर्णन करता है और रति और कामदेव उसे सुनते हैं।

दूहा ॥ [3]निकट सुकी सुक उच्चरय। कर अवलंबित डार ॥
मवरिय अंब [4]सु अंब लगि। सुनत सु मारनि मार ॥छं०॥७४॥
विनय साल [5]सुक सुकनि दिषि। सर संभरिय अपार ॥
मानो मदन सुमत्त की। विधि संजोगि सु सार ॥ छं० ॥ ७५ ॥

मान एवं गर्व की अयोग्यता और निन्दा।

साटक ॥ मानं भंजन नेहमान [6]त्वगुना, सज्जन्न सा दुर्ज्जनं ॥
मानं छंदय तोरनेव जुरयं, सानेव मंदं पिमं ॥
मानं छंदय तोरनेव गुनयं, मानेपि नरुयं बुरं ॥
इक्कं मानय बार भारथ गुरं, आवंत मानं लघुं ॥ छं० ॥ ७६ ॥

दूहा ॥ न भवति मान संसार गुन। मान दुष्ष को मूल ॥
सो परहरि संयोग तूं। मान सुहागिनि [7]स्रूल ॥ छं० ॥ ७७ ॥

(१) ए. कृ. को.-सुनैइ। (२) ए. कृ. को.-सारसा।
(३) ए. कृ. को. निकर। (४) ए. कृ. को.-नंत।
(५) मो.-विदय सार सुक्कीय दिषि। (६) मो.-त्रगुना। (७) मो.-मूल।

विनय का गौरव।

एक विनय गरुअंत गुन। अव्वह विनयंति सार॥
सीतल मान सु जंपियै। तौ बन दव्है 'तुसार॥ छं०॥ ७८॥

विनय की प्रशंसा और उसके द्वारा स्त्रियोचित साधनों का वर्णन।

विनय महा रस भंतिगुन। अवगुन विनय न कोइ॥
जोगीसर विनय जु पढ़ै। मुगति सलभ्भै सोइ॥ छं०॥ ७९॥
विनय नहीं जौ पंषियन। तरु नहिं दोष दियंत॥
फल चष्षै पत्तइ हतें। मानय गुनय गहंत॥ छं०॥ ८०॥
एकै विनय सभग्ग गुन। तजत न विनय अरिष्ट॥
जाने घर सूना हुआ। भोइ नता करि मिष्ट॥ छं०॥ ८१॥
मो पुच्छै जौ सुंदरी। तौ जिन तजै सुरंग॥
जिम जिम विनय अभ्यासिहै। तिम तिम पिय मनपंग॥छं०॥८२॥

कवित्त॥ विनय देव रंजिये। विनय वहु विद्य देइ गुर॥
विनय द्रव्य लहि सेव। विनय विष तजै अप्प सुर॥
विनय दत्त अदतार। विनय भरतार हार उर॥
विनय करह करतार। विनै संसार सार सुर॥
वय चढ़त चढ़ै विनया सुबर। सव शृंगाररति भार वपु॥
बंभनिय भनै संजोग सुनि। विनय बिना सब आर तपु॥छं०॥८३॥

चौपाई॥ बंभनियं भनियं संजोई। वयसंध्या सु सुधा बुधि भोई॥
तूं सक सौतिन पिय बसि होई। विनय सुबुद्धि देहि बुधि तोही॥
छं०॥ ८४॥

दूहा॥ विनय उचारन चाचु मुग्ध। द्रिष्षिय सारन सार॥
कामत्तन सुद्धै सगुन। कंत करै उरहार॥ छं०॥ ८५॥

चंद्रायन॥ काम धरा धरकंत सुरत्तौ। तब संजोगिनी बोल्ल अहित्तौ॥
'अच्छिर छंद सु चंद विरत्तौ। सक्करया पय भुष्षह पित्तौ॥छं०॥८६॥

(१) ए. कृ. को.-तुषार। (२) ए. कृ. को.-अछिर छंद सुछन्द सु विंत्ती।

गाथा ॥ मुंष पित्तौ पति रोगै । लग्गै विषमाइ सक्करं मुषयं ॥
जंतुर पये सुबाले । कामं रत्ताय मोहनो धंरयं ॥ छं० ॥ ८७ ॥

उपरोक्त कथनोपकथन के प्रमाण में एक संक्षेप आख्यान।

कबित्त ॥ एक काल सुंदरी । दोइ भगनी अधिकारी ॥
एक मान सड्यौ । एकं वनिया विचारी ॥
जिन चय किन्नौ मानं । सुष्य तिन देह न लड्डौ ॥
अंतकाल संग्रहै । चिंत्त तन मोह विलुड्डौ ॥
जामंति अंति सा गत्ति हुई । ता मत्ती सारन [1]सुन्नर ॥
ऊरद्ध नरक बहु मोगि कै । जम्म लभ्भ पसु पंषि [2]तर ॥ छं० ॥ ८८ ॥

स्त्रियों के लिये विनय धारणा की आवश्यकता।

दूहा ॥ जिन चिय लभ्यौ विनय रस । सुष लड्डौ तन मंझ ॥
विनय बिना सुंदर इसी । बिन दीपक ग्रह संझ ॥ छं० ॥ ८९ ॥

कवित्त ॥ ज्यों बिन दीपक ग्रेह । जीव बिन देह प्रकारं ॥
देवल प्रतिम बिहून । कंत बिन सुंदरि सारं ॥
लज्या बिन रजपूत । बुद्धि बिनु भोग न जानिय ॥
बेद बिना बर विप्र । करन बिन कित्ति न ठानिय ॥
विनय बिना [3]सुंदरि अधम । कंत देइ दूनौ सु दुष ॥
संजोगि भोग विन्दयौ बड़ौ । लहै विनयमंगल सुसुष ॥ छं० ॥ ९० ॥

विनयहीन स्त्री समाज में सुशोभित नहीं होती।

गाथा ॥ [4]बेदयौ बंचितं विप्रं । भेषजं बहु लोइ ग्रंथयं गुनयं ॥
सब जंजार सु जानं । जुन्हाई नेव जानयं तत्तं ॥ छं० ॥ ९१ ॥
तं तू विनय बिहूंनी । युं दिट्ठइ सुंदरी तनयं ॥
यो [5]वासंतति काल । पत्तं बिना तरवरं रचयं ॥ छं० ॥ ९२ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-सुन्नर। (२) ए. कृ. को.-तन।
(३) ए. कृ. को.-सुघर। (४) ए. कृ. को.-वेदया वंचित विप्पौ।
(५) मो.-यौ बासंत सुकालं।

दूहा ॥ बहु लज्जा कहि जात चिय । तन मंडन अबलान ॥
[1]काल बसंत रु बाल ग्रह । सो मतिमंत सुजान ॥ छं० ॥ ९३ ॥

एक मात्र विनय की प्रशंसा और उपयोगिता वर्णन ।

कवित्त ॥ विनय सार संसार । विनय बंध्यौ जु जगत सब ॥
विनय काल निकाल । विनय संसार स्वर [2]अब ॥
विनय बिना संसार । पलक लभ्भै न सुष्य तनु ॥
जहां जाइ सो रिप्प । ग्राह संग्रह्यौ देह जनु ॥
नृप रीति विनय लग्गी रवनि । विनय उचारन चार रस ॥
विनय बिना सुंदरि इसी । सुपन होइ उद्यान [3]जस ॥ छं० ॥ ९४ ॥

सोरठा ॥ विनय तरुन अरु बाल । विनय होइ जुब्बन दिनन ॥
तौ पल्लै प्रतिपाल । विनय सु हृड्डय बंधि रस ॥ छं० ॥ ९५ ॥

दूहा ॥ भरत भाम तारन सुरस । विनय भाष जस साष ॥
जिम जिम विनय सु संग्रहै । तिम लभ्भै अभिलाष ॥ छं० ॥ ९६ ॥

कवित्त ॥ विनय सार संसार । विनय सागर रसधारी ॥
विनय उतारन पार । मुक्ति अप्पन अधिकारी ॥
विनय लहै सब जुगति । विनय बिन भक्ति न होई ॥
विनय सुरस उच्चार । पार कछून रस होई ॥
गुनवंत निगुन सग्गुन अगुन । विनय बिना तन बालयौ ॥
गुन बिना धनुष क्रम बिन सुफल । [4]उभभ्भर मठ देवालयौ ॥
छं० ॥ ९७ ॥

दूहा ॥ विनय सुबंधी सुबुध हिय । जौ सुष चाहत बाल ॥
विनय न छंडय सुंदरी । तिन एननै प्रतिपाल ॥ छं० ॥ ९८ ॥

गाथा ॥ बाले विनंयति सारं । देहं मध्य तत्त ज्यौ जीवं ॥
त्यों जीवं सुष देही । विनय बिना बालयं नेहं ॥ छं० ॥ ९९ ॥

दूहा ॥ विनय सुरस बंभनि कहै । पढ़न सपंग कुंआरि ॥
बलह बसि दूजैं सुबल । तौ बसि बलह सु नारि ॥ छं० ॥ १०० ॥

---

(१) मो.-काल वसैं तरु बालग्रह । (२) मो.-रस, कृ. को.-सब ।
(३) मो.-तस । (४) ए. कृ. को.-उज्जर मढ़ ।

प्रथम सुरस हथ्थै अपन। तो हथ्थै अप पीव ॥
सुनि संजोग संजोग है। जीव दै लीजै जीव ॥ छं० ॥ १०१ ॥

कवित्त ॥ निकट सुष्य संजोग। पीय अप्पन बसि होई ॥
सोइ विनय सजोग। तीय पिय बदन न जोई ॥
सोई विनय संजोग। अप्प छाडै विषया रस ॥
सोई विनय संजोग। दई किज्जै अप्पन बसि ॥
सोइ एक विनय जौ तूं पढ़ी। बढ़ी मत्ति चढ़ि चंद बिय ॥
रति छंडि मान क्रिमबीय चिय। तो ग्रह जीवन संचलिय ॥
छं० ॥ १०२ ॥

कं बसि कीनी कंत। विनय बंध्यौ परिमानं ॥
जिम जिम विनयति बढ़ै। सुष्य तिम तिम सरमानं ॥
विनय नेह तन सजल। सिंचि सुष बेलि बढ़ावै ॥
फल अमृत-संग्रहौ। मान सब कहीं दिढ़ावै ॥
सो विनय बिना नारीन क्यौं। विनय बिना संसार सह ॥
पसु पंषि जीव जल थल जिमय। विनय बिना संयोग वह ॥
छं० ॥ १०३ ॥

गाथा ॥ सम विस हर विस गंत्तं। अप्पं होइ विनय बसि बाले ॥
घट नवरस दुअ सद्दें। गारुड़ विना मंच साभरियं ॥
छं० ॥ १०४ ॥

कवित्त ॥ विनय सथ्य जस जीव। विनय भोगवन सुष्य वर ॥
विनय देन रसपान। विनय आचरन अमृत धर ॥
अह रयनि अंतरै। विनय सुंदरि अभ्यासै ॥
मान नेह संग्रहै। मान भंजै गुन भासै ॥
द्रुम बिनै बाल मुक्कै न तूं। सुनहिं सुकी सुक श्रवन कथ ॥
लच्छिन सहज्ज अरु विनय गुन। दिषित माल उप्पर सुतथ ॥
छं० ॥ १०५ ॥

दूहा ॥ विनय पढ्यौ संजोग सुभ। तन में विनय सुभंत ॥
ज्यों जल बलि जलहीं जियै। विनय जियै बर कंत ॥ छं० ॥१०६॥

इति विनय मंगल कांड समाप्त।

चंद्रायन ॥ सुनि संजोग सिषावन सावन संभरिय।
हीय हितानिय पीर न पावै बंझरिय॥
गुर [1]गुज्झं नन कन्न जमावन जुग्ग हुअ।
अच्छिर अध्य प्रमान विराजत मझ्झ धुअ॥ छं० ॥ १०७॥

ब्राह्मणी का रात्रि को पुनः अपने पति से संयोगिता के विषय में पूछना और उसका उत्तर देना।

मुरिल्ल ॥ सु धरती तर रत्तिर रत्तिय। दुज्ज दुजानी वत्तर मत्तिय॥
प्रेम प्रियं रज राजन मंडिय। ज्यौंहा जाम उभै घट [2]पंडिय॥
छं० ॥ १०८॥

दुजी का दुज से कथा कहने को कहना।

कवित्त ॥ मदन वृद्ध बंभनिय। मार माननिय मनोवसि॥
कामपाल संजोग। विनय मंगल्लति पद्धति रस॥
तहां सहारंतर एक। अंग अंगन घन मौरिय॥
सुक पिक पंषि असंष। बसहि वासर निसि घोरिय॥
इक वार दुजी दुज सों कहै। सुनहि न पुब्ब अपुब्ब कथ॥
उतकंठ बधै मन उल्लसै। इहहि नींद अवै [3]सुनत॥ छं० ॥ १०९॥

दुज का उत्तर।

दूहा ॥ दुज फुनि दुजि सों उच्चरिग। कहि राजन बर बत्त॥
जाग भोग जुद्धह जुरन। करन सु कीरन हित्त॥ छं० ॥ ११०॥

पृथ्वीराज का वर्णन।

कवित्त ॥ एक राव संभरीय। दुतिय जोगिनि पुर भूपति॥
तेज मौज्ज अजमेर। उअर उद्धारति मूरति॥
बान मध्य वय मध्य। मध्य मह महि तन मोचन॥

(१) पू. कृ. को.-गुझ्झंनन।
(२) मो.-घट पंडिय।
(३) ए. कृ. को. सुनत।

छिति छितान धूर भ्रम्म। भ्राम धर हिय रति रोचन ॥
छचि देव देव मंडल्ल सभा। इक इक अध्धि अषंडलिय ॥
सुरतान बंधि षुरसान रति। मंत अषंड सुदंड लिय ॥ छं० ॥१११॥

कथा सुनते सुनते ब्राह्मणी का निद्रामग्न होजाना।

दूहा ॥ सुनत कथा अछिवत्तरी। गइ रत्तरी बिहाय ॥
दुज्ज कह्यौ दुजि संभल्यौ। जिहि सुष श्रवन सुहाय ॥ छं० ॥ ११२॥
होत प्रात तब पठन तंजि। धाइ हिंडोरन आइ ॥
इह चरित्त दुज देषि कै। पछ जुग्गिनिपुर जाइ ॥ छं० ॥ ११३ ॥

इति श्रीकविचंद विरचिते प्रथिराज रासके संयोगिता कौ विनय मंगल वरननो नाम छियालीसमो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ४६ ॥

अथ सुक वर्णन लिष्यते ।

(सैंतालीसवां समय ।)

संयोगिता का यौवन अवस्था में प्रवेश ।

दूहा ॥ मदन वृद्ध ग्रह बंभनिय । पढ़न कुँआरिक छंद ॥
बार बार लोकन करहि । जिम नछिच विच चंद ॥ छं० ॥ १ ॥
बालप्पनं अप्पान सुष । सुष्प कि जुव्वंन मेंन ॥
सुभर श्रवन साषिन करहि । दुरि दुरि पुच्छत नेंन ॥ छं० ॥ २ ॥
[1]स्लोक ॥ प्राप्तं च पंग ग्रेहं । जग्य [2]आपय होमनं ॥
तच बंधं दंड देहा । राजा मध्य महावत् ॥ छं० ॥ ३ ॥

शुक और शुकी का दिल्ली की ओर जाना ।

हनूफाल ॥ इति हनुफालय छंद । गुरु च्यार नभ जिम चंद ॥
उड़ि चले दंपति जोर । चित्तइ स [3]पिथ्थह ओर ॥ छं० ॥ ४ ॥

शुक का ब्राह्मण के वेष में पृथ्वीराज के दरबार में जाना ।

जित संभरी हतथान । वर मंच इष्ट संमान ॥
पते सुढिक्षिय थान । अपभेद किय परिमांन ॥ छं० ॥ ५ ॥
नरभेष धरि साकार । दुज भेज सुक्की सार ॥
दिषि ब्रह्म भेस अकार । किय मान अर्ध अपार ॥ छं० ॥ ६ ॥

ब्राह्मणी का संयोगिता के पास जाना ।

दूहा ॥ सोई दुज दुजनी करै । बंहु तरवर उंड़ि जानि ॥
सो सहार संजोग किय । तीयह रम्य सु थान ॥ छं० ॥ ७ ॥

दुज का पृथ्वीराज से संयोगिता के विषय मे चर्चा करना ।

---

(१) अन्य प्रतियों में गाथा करके लिखा है ।
(२) ए.-जायं ।
(३) को.-कृ.-पिथ्थिह ।

कवित्त ॥ कहै सु दुज दुजनीय । सुनौ संभरि न्त्रप राजं ॥
तीन लोक हम गवन । भवन दिष्षे हम साजं ॥
जं हम दिष्षिय एक । तेह नभ तड़िक अकारं ॥
मदन बंभनिय ग्रेह । नाम संजोगि कुमारिं ॥
सित पंच कन्य तिन मध्य अव । अवर सोभ तिन समुद बन ॥
आकास मझि जिमं उडगनिनं । चंद विराजै मनों भुवन ॥ छं०॥८॥
दूहा ॥ मदन चरिच सु बंभनिय : मदन कुंआरि सु अंग ॥
सोइ बत्त कनवज्ज पुर । पंग पुत्ति मम चंग ॥ छं० ॥ ९ ॥
गाथा ॥ अप्पन तन छवि दिष्षं । सिष्षं भेदाइ दुष्षनो जीवी ॥
दुष्षं संभरि राइं । कहियं आज आगमं नौरं ॥ छं० ॥ १० ॥
दूहा ॥ अप्पन तन छवि देषि कै । सुष भरि दिष्षी नाहि ॥
दुष्ष स्संभरिय अनूरँग । वर ओपम नहिं ताहि ॥ छं० ॥ ११ ॥
कवित्त ॥ भाजन अग्गि उतिष्ट । मध्य चमकंत गरिष्टं ॥
मिलि नषच भंजनं । नाभि द्विव चरित सु मिष्टं ॥
धन्नि धन्नि उच्चार । कह्यो रषि जरजित नामं ॥
गरभ जुन्हाइय जाह । होइ सुष किति सु तामं ॥
जैचंद पुत्ति कलहंत गति । विधि अनेक व्रनंन करिय ॥
कनवज्ज वास गंगा सु तट । संत सुमंत सु विस्तरिय ॥ छं० ॥ १२ ॥

संयोगिता की जन्म पत्रिका के ग्रह नक्षत्रादि वर्णन ।

दूहा ॥ इह कहंत गुरराज न्त्रप । जनम पचिका बाल ॥
जन्म सुषादी उद्धरिय । को यह उंच रसाल ॥ छं० ॥ १३ ॥
कवित्त ॥ दुजनी दुज पुच्छयौ । दुज्ज दुजराज कवछ्यौ ॥
मंगल बुध गुरु सक्र । सन्नि सोमार चवछ्यौ ॥
केइंद्री गुर केत । राह अष्टम अधिकारिय ॥
इन नछिच दुज कहै । देव जगि पंगह ढारिय ॥
निरमान रंभ अवतार धरि । काम गनं गुन विस्तरिय ॥
कलहंत नाम कलि जुग्ग महि । बर बंछै सोइ संभरिय ॥ छं०॥१४॥
स्लोक ॥ जन्मस्य पंचमो नैव । राहकेतं नक्षचया ॥
पंगानी च जया पुची । मूल भारथ्य मंडिनी ॥ छं० ॥ १५ ॥

छः महीने में विनय मंगल प्रकरण का समाप्त होना।

दूहा ॥ इह कहंत षट मास गय। लिषि अंकूरन बाल॥
पच्छ दीय बर काढ़ि कै। लिषि जनमोति रसाल ॥ छं० ॥ १६ ॥

विनय मंगल समाप्त होने पर ब्राह्मणी का संयोगिता से पृथ्वीराज और दिल्ली के सम्बन्ध की कथा कहना।

पद्धरी ॥ लिषि छंद बंध जनमोति ताम। तिहि दीह धन्यौ बर बाम काम ॥
तिन दिना तुच्छ हर नयन काज। जानियै वीर बाला विराज ॥
छं० ॥ १७ ॥
तन त्रिगुन भए देवत्त लाज। आवंत लाज की लाज साज ॥
दिन धरउ पढ़न जंपन सुबाल। मंगलति विनय मंगल विसाल ॥
छं० ॥ १८ ॥

अनंगपाल के हृदय में वैराग उतपन्न होने का वर्णन।

इह पढ़हि बाल अप ग्रेह थान। ढिल्ली नरिंद कग्गर सु ताम ॥
बरजै न कोइ मंत्री प्रमान। जिन देहि भुम्मि दुरजनति दान ॥
छं० ॥ १९ ॥
सिंगार संग अनगेस राज। पायौ न पुच फल नीठ साज ॥
सत्तरिरू सत्त वर्षह रसाल। पयौ सुदीह अन्न सु काल ॥ छं० ॥ २० ॥
आना नरिंद तस वंस राज। चिंत्यौ जु अप्प दोहित्त काज ॥
चिंतिय अचिंत मनि मित्त मित्त। जंघार भीम ओड़न विअत्त ॥
छं० ॥ २१ ॥
अनगेस ईस अनगेत पुज्ज। लिषि भोज बंध प्रारंभ कज्ज ॥
छं० ॥ २२ ॥

दूहा ॥ अनग सपत्ता कथ्य कथि। सोधि सु बंधव बीर ॥
करि अप्पन तिथ्थह गवन। को साधंन सरीर ॥ छं० ॥ २३ ॥

मंत्रियों का अनंगपाल को राज्य देने के लिये मना करना।

चोटक ॥ मय मंत गुरू दस हार पयौ। सह कंक्रन चामर तीन नयौ ॥
षट हाटक चोटक छंद बलौ। सु कही कविचंद उपंग भलौ ॥ छं० ॥ २४ ॥

जिन ठौर बरंजत मंच पथं। नन मानिय राज कथा न कथं ॥
भिरि भंजय रंजय प्रज्ज सबै। जिन जाई सु तिथ्य अनंग अबै ॥
छं० ॥ २५ ॥

धरं रषिय लच्छि सुमंत मनं। उपजै तिम मड्डि विकार सनं ॥
क्रत काम कला लषि षोडसयं। बरदाइ कहै सोइ देवतयं ॥
छं० ॥ २६ ॥

अरिल्ल ॥ उत्तर दिसि औरह उड्डाई। कागद लिषि प्रोहित्त बधाई ॥
तब राजंन सुनत लै लग्गी। बढ़ि आनंद हृदय तब जग्गी ॥छं०॥२७॥

अनंगपाल का पृथ्वीराज को राज्य देदना।

भुजंगी ॥ लबं चित्त चिंता सुचिंता बिचारी। ननं रुंच मानै गुरं धीर कारी ॥
चवं चिंत चिंता अचिंता प्रमानं। मयं बीर बीरं लघू दिव्य पानं ॥
छं० ॥ २८ ॥

प्रथीराज राजंत दोहित्त पुत्तं। तिनं वंस मातुल्ल अति प्रीत पत्तं ॥
झलक्कं झँगूरं लिषे पेषि हथ्थं। हितं राज अंगं अनंगेस पुत्तं ॥
छं० ॥ २९ ॥

पृथ्वीराज की कूटनिति से प्रजा का दुःखित होकर अनंगपाल के पास जाना।

दूहा ॥ आइ संपते लोग बर। संभ धरहर काज ॥
नवन रीत राजस कही। जानि कुलंगन बाज ॥ छं० ॥ ३० ॥

अनंगपाल का पुनः बदरिकाश्रम को चला जाना।

कवित्त ॥ संचरि सौच सुहत्त। राज पत्तौ सु धाम न्रप ॥
फल सु प्रीति हित हेम। सेत दिष्षयौ रजक चप ॥
अनंग पाल छितिपाल। मुक्कि चल्ल्यौ सु तिथ्थ भ्रम ॥
हेवर चीर रतंन। गयो बदरी सुहत्त क्रम ॥
यों मिले सब्ब परिगह न्रपति। ज्यों जल झर बोहिथ्य फटि ॥
दिसि दिसा च्यार अचरिज्ज बर। बजि निसान नीसान घटि ॥
छं० ॥ ३१ ॥

गाथा ॥ ऐरापति फनिगंगं । चामर मराल मालती पहयं ॥
ता अंबीय प्रमानं । उज्जल कित्तीय सोमेसा सूरं ॥ छं० ॥ ३२ ॥

दसों दिशाओं में सुविस्त्रित पृथ्वीराज की उज्वल कीर्ति का आकाश में दर्शन होना ।

अति कित्ती अति उज्जली । बरने वा चंदयो कव्वी ॥
जानिज्जै परिमानं । राजानं संमयो नथ्यिं ॥ छं० ॥ ३३ ॥

दूहा ॥ वह मंडल न्रप देषि कै । चंद सु ओपम पाइ ॥
मानौ चंद सरद कौ । संग उड्गन आइ ॥ छं० ॥ ३४ ॥

दै दुज्जनि दुज उत्तरह । दुह्न रूप चमकंत ॥
कोइ कहै प्रतिव्यंब है । को कहै प्रीति अनंत ॥ छं० ॥ ३५ ॥

संयोगिता का वर्णन ।

कवित्त ॥ चंद बदनि म्रगनयनि । भौंह असित को वंड बनि ॥
गंग मंग तरलति तरंग । बैनी भुअंग बनि ॥
कीर नास अगु द्रिपति । दसन दामिनि दारमकन ॥
छीन लंक श्रीफल अपीन । चंपक बरनं तन ॥
इच्छति भतार प्रथिराज तुहि । अहनिसि पूजति सिव सकति ॥
अध तेरह बरषं पदंमिनी । हंस गमनि पिष्यहु न्रपति ॥छं०॥३६॥

बारह के बाद और तेरह के भीतर जो स्त्रियों की वयःसंधि अवस्था होती है उसका वर्णन ।

दूहा ॥ तिहि तन बुन न्रप सौं कहै । दुहु अंतर सिसु बेस ॥
जुब्बन तन उद्दिम कियौ । बालप्पन घटनेस ॥ छं० ॥ ३७ ॥
बालप्पन तनं मध्य वय । गादरि तन चष नूर ॥
ज्यों बसंत तरु पल्लवन । इह उठ्ठन अंकूर ॥ छं० ॥ ३८ ॥
बय बालत्तन मध्य इम । प्रगट किसोर किसोर ॥
राकापति गोधूर कह । आभा उद्दित जोर ॥ छं० ॥ ३९ ॥

ज्यों दिन रत्तिय संध गुन। ज्यों उष्णह हिम संधि ॥
यों सिस जुब्बन अंकुरिय। कछु जुब्बन गुन बंधि ॥ छं० ॥ ४० ॥
ज्यों करकादिक मकर मैं। राति दिवस संक्रांति।
यों जुब्बन सैसव समय। आनि सपत्तिय कांति ॥ छं० ॥ ४१ ॥
यों सरिता अरु सिंध सँधि। मिलत दुहून हिलोर ॥
त्यौं सैसव जल संधि में। जोवन प्रापत जोर ॥ छं० ॥ ४२ ॥
यों क्रम क्रम बनिता सु बय। सैसब मध्य रहंत ॥
सीतकाल रबि तेज ससि। घामरु छांह सुहंत ॥ छं० ॥ ४३ ॥
सैसव मध्य सु जोबनह। कहि सोभा कबिचंद ॥
पाव उठै तर छांह छबि। पोज न नीच रहंत ॥ छं० ॥ ४४ ॥
जीति जंग सैसव सुबय। इह दिष्षिय उनमान ॥
मानों बाल बिदेस पिय। आगम सुनि फुलिकाम ॥ छं० ॥ ४५ ॥
गाथा ॥ यों राजति वय राजं। सैसव मध्येय सोभियं सारं ॥
ज्यों जल जोर प्रमानं। कमलानं कोर उच्चयं होइं ॥ छं० ॥ ४६ ॥
दूहा ॥ यों सैसव जुब्बन समय। विधि बर कीन प्रकार ॥
ज्यों हथलेवहु दंपती। फेरे फिरिअन पार ॥ छं० ॥ ४७ ॥
यों राजत अवनी कला। सैसव में कछु स्याम ॥
ज्यों नभ परिवा चंद तुछ। राह रहि बल ताम ॥ छं० ॥ ४८ ॥

स्त्रियों के यौवन से वसंत ऋतु की उपमा वर्णन।

पद्धरी ॥ उत्तरन ससिर रति राज नाइ। अह संधि जिसें निसि संधि पाइ ॥
जुब्बनह अवन सैसव सुनाइ। कछु संक अंग पै तिडर ताइ॥छं०॥४९॥
सैसव सुससिर रितुराज थान.। मानहिं बसंत जुब्बन न आन ॥
अनमंध मधुप मधु धुनि करंत। पंचहि कटक्क सिसिरह वसंत ॥
छं० ॥ ५० ॥
भुअ नीच नेनं नचै नवाय। आवंत जुवन जनु करि बधाय ॥
जिम सीत मंद सुगंध वाय। कछु सकुच एम बर करहि पाइ ॥
छं० ॥ ५१ ॥

जुब्बन नवत्त सिसु सरिर मंद। बिरही सँजोग रस दुअनि छंद॥
मीन मन मंत मंहि सुनि बसंत। जुब्बन उछाह सिसु सिसर जंत॥
छं० ॥ ५२॥
अंकुरिन पत्त गड्डरित डार। सिसु मध्य स्याम ज्यों सोमि सार॥
पिय ओर पिया जिम दिष्षि लुक्कि। सिसु मध्य बेस इम आइ ढुक्कि॥
छं० ॥ ५३॥
उर धक्कि सिद्ध सैसव सु सुट्ठ। जिम मैंन मोज जुब्बन सउट्ठ॥
कलयंठ कंठ रष्षै संवारि। मिलिहै बसंत करिहै धमारि॥छं०॥५४॥
चिय तरस पुच्छ उट्ठीय कोर। जल मीन जाल ज्यों हलत डोर॥
मुकलित वाय तरु हलत छीन। त्यों काम तेज चलि नैन मीन॥
छं० ॥ ५५॥
संजोगि अंग जोबन चढ़ंत। तहं उट्ठि ससिर आयौ बसंत॥
वयभोग बुद्धि सुंदरि सहज्ज। रितुराज गयै जिम रैनि लज्ज॥
छं० ॥ ५६॥
दूहा॥ जनम सुष्प जोबन जई। उई सु सैसव ठार॥
संभरि न्रप संभरि धनी। तनह सु भौ रति मार॥ छं० ॥ ५७॥
सजि सुपंग राजा सुभर। दिसि दिसि जित्तन वान॥
उभै दिसा बर मंच जिल। अट्ठदिसा भर षान॥ छं० ॥ ५८॥

संयोगिता की बड़ी बहिन का व्याह और उसकी सुन्दरता।

कवित्त॥ एक सु पुचिय पंग। दीय दछिन सु देव ग्रह॥
मान हीन माननिय। रूप उप्पम रंभा कहि॥
सुबर काम रति बाम। मनों फेरिय सो आनिय॥
कमल अनूपम काज। कछू ओपम मन मानिय॥
लच्छन बतीस वयसंधि इह। सो ओपम अग कथ्ययौ॥
चढ़नह सुमन्नमथ चित्त रथ। चढ़न मंत्ति चित रथ्ययौ॥
छं० ॥ ५९॥

संयोगिता के सर्वाङ्ग शरीर की शोभा का वर्णन।

पद्धरी॥ संजोग संधि जोबन प्रवेस। चितमंडि सुनौ संभरि नरेस॥

श्रीषंड पंक कुंकम सुरंग। मानों सु करी कर मरदि लंग ॥
छं० ॥ ६० ॥

उप्पमा नष्ष आवै न कव्वि। तिन पड़ी छोड़ मयुषन सरब्ब ॥
इक अंग उपम कहियै सुदुत्ति। तारकन तेज द्रप्पन सु मुत्ति ॥
छं० ॥ ६१ ॥

पिंडुरी अंग झलकत सु रूर। मनु रत्त रंग कंचन कि चूर ॥
ओपम्म नष्ष फिरि कहि उपाइ। कन्नैर कली फूलंत राइ ॥
छं० ॥ ६२ ॥

पिंडुरी पाइ सोभंत बाम। थँभ श्रोन षंभ सोवन्न बाम ॥
उर जंघ दंड ओपम निरंग। गज सुंड डिंभ कै श्रोन रंग ॥
छं० ॥ ६३ ॥

नित्तंव तुंग इन भाइ कव्वि। धरि चक्र सँवारि दुज बाम रब्बि ॥
नित्तंब भाग उत्तंग छंड। मनु तुलत काम धरि लंक दंड ॥
छं० ॥ ६४ ॥

लंकह प्रमान मुट्ठीत घट्टि। बैनी ढलक्क दीसंत पुट्ठि ॥
चिंतै सुकव्वि ओपंम ओर। नागिनि सु हेम षंभह सुजोर ॥
छं० ॥ ६५ ॥

राजीव रोम अंकुरिय वार। मानों पपील बंधी विलार ॥
गति हंस चलत मुक्कत विचार। सिषवंत रूप गहि बंधि भार ॥
छं० ॥ ६६ ॥

कुच सरल दरस नारिंग रंग। मरदे कि कुंक कंचन उपंग ॥
जोवन प्रसंग इह रूप हद। छुर करी हरी मुक्कै मसद ॥
छं० ॥ ६७ ॥

तब लग्गि होत हम थान मत्ति। जब लग्गि आन सैसव किरत्ति ॥
अधबीच बात इम सुनी तास। कहि लेषि लोग आवै न हास ॥
छं० ॥ ६८ ॥

कलग्रीव रहे चिवलीय चाह। बैठोति चंद आसनति राह ॥
अध अधर अरुन दीसै सुरंग। जानै कि बिंब फल चंद जंग ॥
छं० ॥ ६९ ॥

ओपम सुचंद बरदाइ लीन। मनु अगर चंद मिलि संग कीन॥
मधु मधुर बानि सद सहति रंग। कलयंठ कंठ केकीन लंघ॥
छं० ॥ ७० ॥

बर दसन पंति दुति यों सुभाइ। मोइक चंद जुब्बन बनाइ॥
नासिक अनूप बरनी न जाइ। मनों दीप भवंन त्रिघघात पाइ॥
छं० ॥ ७१ ॥

सुंदरि बदन्न द्रनौ बनाइ। मानों रथ्यरवि दीपह मनाइ॥
कहां लगि कहौं चहुआन बाम। सैसव सुबाल कंपैति काम॥
छं० ॥ ७२ ॥

अंबुज नयन्न मधुकर सहित्त। षंजन चकोर चमकंत चित्त॥
बैनीति साल सोभै बिसाल। मनों अरध उरग चढ़ि कनक साल॥
छं० ॥ ७३ ॥

दूहा ॥ इह सुनि न्त्रपति नरिंद दिन। भय श्रोतान सुराग॥
तब लगि पंग नरिंद कै। बाजे बाजन लाग॥ छं० ॥ ७४ ॥

ब्राह्मण के मुख से संयोगिता के सौंदर्य्य की कथा सुनकर पृथ्वीराज का उस पर मोहित हो जाना।

सुनि संजोगि अपुब्ब कथ। पंग चरित्त न काज॥
मंच मदन बंभनि उभै। जोगिनि मुक्के राज॥ छं० ॥ ७५ ॥
जो चरित्त चिंतै मनह। सोई रूपक राइ॥
न्त्रिप अग्गै हर बंधि कै। कल कंनवज्जह जाइ॥ छं० ॥ ७६ ॥

कवित्त ॥ भय अनंग न्त्रप अंग। श्रवन श्रोतान सु बढ्ढिय॥
संभरि संभरिनाथ। पंच बानन तन दढ्ढिय॥
मध्य हिय न छिन टरहि। श्रवन मन नैंन निरष्षै॥
चित्त गयंदह फेरि। रति न मानै बिन दिष्षै॥
संभरि सुवत्त संभरि न्त्रपति। फुनि फुनि पुच्छै तिन सु कथ॥
बुधि मदन सु बंभनि केलि सुनि। कुटिल तमकि चढ्यौ सु रथ॥
छं० ॥ ७७ ॥

(१) ए. राह।

पृथ्वीराज की काम वेदना और संयोगिता से मिलने के लिये उसकी उत्सुकता का वर्णन।

कुटिल तमकि रथ चढ़त। बढ़िय श्रोतान कल न तन॥
निसा दिवस सुपनंत। राज रघ्योति मद्धि मन॥
फिरै संजोगिअ पास। और रस मुक्कलि राजं॥
देउं द्रव्य मन बंछि। आइ प्रमुधै चिय आजं॥
दुज चलै उड्डि कनवज्ज दिसि। ग्रेह सपत्तं बंभनिय॥
चहुआन तेज गुन दुति सबल। सुनत संजोगी तं गुंनिय॥छं०॥७८॥

सती का ब्राह्मणी स्वरूप में कन्नौज पहुंचना।

दूहा॥ दुज सलह उच्चै कहै। कब काहि नीचं बैन॥
देषि संयोगि अचिज्ज बहु। तब करि उंचे नैन॥ छं०॥ ७९॥
देषि संयोगि अचिज्ज हुअ। पुच्छत पंग कुमारि॥
कोन देस को भेस ननि। क्यों आवन सु विचार॥ छं०॥ ८०॥

यहां पर ब्राह्मणी का पृथ्वीराज की प्रशंसा करना।

पद्धरी॥ सुनि एक राइ संभरि नरेस। पुरस्तान षान बंधे असेस॥
धनु धनुक धार अर्ज्जुन समान। मनि रतन निद्धि जस आसमान॥
छं०॥ ८१॥
बर तेज ओज जमजोर जोर। धरि छिपै तेज मनु चंद चोर॥
जिन बान तेज गज सुक्कि मद्द। चतुरंग सज्जि चव कलन हद्द॥
छं०॥ ८२॥
इह जोग बीर मुर्वी न बीर। बेधत्त सत्त बर एक तीर॥
कनवज्ज रीति बजि जेय कंध। इह धक्कि राज रह होइ (१)निंध॥
छं०॥ ८३॥
जोगिनी भूप औधूत रूप। कहां कहौं रूप पंषी अनूप॥छं०॥८४॥

पृथ्वीराज के स्वाभाविक गुणों का वर्णन।

(१) ए.-निंद्द।

साटक ॥ लज्जारूपगुणेन नैषध सुतो, वाचा च धर्मो सुतं ॥
बाने पार्थिव भूपति समुद्दिता, मानेषु दुर्योधनं ॥
तेजे सूर समं ससी अमिगुनं, सत् विक्रमो विक्रमं ॥
इंद्रो दान सुशोभनो सुरतरू । कामी रमावल्लभं ॥ छं० ॥ ८५ ॥

दूहा ॥ दुज सुकही उप्पम भली । कथा सु उत्तम रीति ॥
बढ़ि आनंद सु छंद नन । सुनिग प्रीति सा रीति ॥ छं० ॥ ८६ ॥
दुज्ज दिसा अलिय जु श्रवन । द्रिग अच्छरि दिसि जाइ ॥
मनु सैसव जोबंन बिचै । बाल बसीठ कराइ ॥ छं० ॥ ८७ ॥

उक्त वर्णन सुनकर संयोगिता के हृदय में पृथ्वीराज प्रति प्रीति का उदय होना ।

जिमि जिमि सुंदरि दुजि बयन । कही जु कथ्थ सँभारि ॥
बरनन सुनि प्रथिराज कौ । भय अभिलाष कुँआरि ॥ छं० ॥ ८८ ॥
असन सेन सोभा तजी । सुनित श्रवन्न कुँआरि ॥
मन मिलिबे की रुचि बढ़ी । और न चित्त दुआर ॥ छं० ॥ ८९ ॥

गाथा । अमिए अंमिय बचने । रचने बाल ध्यान प्रथिराजं
गोलक डुलैं न थानं । जानै लिष्षि चित्तयं चरितं ॥ छं० ॥ ९० ॥

पृथ्वीराज की कीर्ति का वर्णन ।

मोतीदाम ॥ अमग्गत दान कहै दुज पान । सुनौ सुनि मान कथा चहुआन ॥
इकं इक बत्त सबै न्रप पाइं । सबैं चहुआन दुती तन छाइ ॥
छं० ॥ ९१ ॥

सकंबिय बिक्रम ज्यों परमान । सतं सत ज्यों सिवरी उन मान ॥
बलद्दै बाह सहस्सयराज । प्रति प्रति काम सु मोचन काज ॥
छं० ॥ ९२ ॥

विधिं बिधि भागति पूरन तेज । ससी सस सीतल ज्यों न्रप केज ॥
सति सत्तह ज्यों हरिचंद समान । बलबुद्धि साइर ज्यों चन्नमान ॥
छं० ॥ ९३ ॥

रसं रज राजत जोति प्रकार । भयंकर भीषम ज्यों करसार ॥

सयंक्रत.पालग पंचव जोति । तिनं मति एक अमंतिय कोति ॥
छं० ॥ ९४ ॥

प्रतिं प्रति पारथ ज्यों प्रथिराज । करी कबिचंद सु ओपम साज ॥
मघवा सुमहीपति कौ बल बीर । तिनै बर बिद्र बरष्षत नीर ॥
छं० ॥ ९५ ॥

धराधर हिंम सुतं लछिराज । उद्यौ मनु इंद्र सु प्राचिय काज ॥
छं० ॥ ९६ ॥

ब्राह्मण का कहना कि चाहुआन अद्वितीय पुरुष है।

दूहा ॥ या समान जौ राज होय । तौ कहियै प्रति जोति ॥
ना समान चहुआन कौ । तौ कहि ओपम कोति ॥ छं० ॥ ९७ ॥
कंत सुकंति सु दिष्षि इम । दुहु श्रोतान बढ़ाय ॥
दुहु दिसि पंग नरिंद दल । एंत्त अवत्त समाय ॥ छं० ॥ ९८ ॥

संयोगिता का पृथ्वीराज से विवाह करने की प्रतिज्ञा करना।

कवित्त ॥ सीय लीय ब्रत राम । सुब्रत नलराज दमंती ॥
सिव ब्रत लीनौ सिवा । क्रष्ण ब्रत रुकमनि कंती ॥
ब्रत ज्यों काली धर्‍यौ । बीर बाहन शंकर बर ॥
ज्यौं ब्रत लिय ब्रतभान । भान पंती सुमंत वर ॥
ब्रत लियौ देव देवत ब्रपत । ब्रत संयोगि चहुआन वर ॥
बर बरौं एक एकह सु ब्रत । कै चहुआन बिसान नर ॥छं०॥९९॥
मन अभिलाष सु राज । बरन सुंदरी भइय मति ॥
जौ तन मध्यें सास । मोहि संभरिय नाथ पति ॥
कै कुआंर पन मरौं । धरौं फिरि अंग पहुमि पर ॥
तौ राजा प्रथिराज । आन मन इंछ नहीं बर ॥
इम चिंत चित्त कुंअरी सु ब्रत । रही भोइ मनं मदेन अहि ॥
कलहंत बीज महि मंडि दुज । अप्प सपत्त ग्रेह कहि ॥छं०॥१००॥
दूहा ॥ यों ब्रत लीनौ सुंदरी । ज्यौं दमयंती पुब्ब ॥
कै हथलेवौ पिय करौं । कै जल मध्यें दुब्ब ॥ छं० ॥ १०१ ॥

संयोगिता का पृथ्वीराज के प्रेम में चूर होकर अहर्निशि उसीके ध्यान में मग्न रहना।

मुरिल्ल ॥ बिय पंगानि कुमारि सुमार सुमार तजि ।
घरी पैहर दिन राति रहै गुन पिथ्थ भजि ॥
भेदं भंजै और जोर मनं में लजिहि ।
लषि पुच्छहि चिय वत्त न तत्त प्रकास किहि ॥ छं० ॥ १०२ ॥

वसंत ऋतु का पूर्ण यौवनाभास वर्णन।

दूहा ॥ सिसिर समय दिन सरस गत । मधु माधव वल मंडि ॥
भार अष्टदस बेल तरु । पत्र पुरातन छंडि ॥ छं० ॥ १०३ ॥
नूतन रत मंजरि धरिय । परिमल प्रगटि सुवास ॥
छत्र रुचिर छवि काम जनु । अलि तुट्टत सुर रास ॥ छं० ॥ १०४ ॥

पद्धरी ॥ आगम बसंत तरु पत्र डार । उठि किसल नइय रँग रत्त भार ॥
अंकुरित पत्र गहरति डार । लहलहति अंग अट्ठार भार ॥
छं० ॥ १०५ ॥

मधुपुंज गुंज कमलनि अधीन । जनु काम कोक संगीत कीन ॥
तरु तरनि कूकि कोकिल सभार । विरहिनी दीन दंपति अधार ॥
छं० ॥ १०६ ॥

कलरव करंत षग द्रुमति रोर । निसि बीति सिसिर रतिराज भोर ॥
चिय पुरुष चषनि रुचि अनंग बढ्ढि । दंपति अनंग विरहिनी जढ्ढि ॥
छं० ॥ १०७ ॥

इम अवनि राजरिल गवन कीन । नव मुग्ध मध्य कंतन अधीन ॥
ग्रह ग्रहनि गान गायंत नारि । मन हरति मुग्ध मध्या धमारि ॥
छं० ॥ १०८ ॥

तन भरति रत्त रँग पीत पानि । हिय मोद प्रगट तन धरत जानि ॥
इम हुअ वसंत आगम अवन्नि । मदमत्त करिय जनु गवन वन्नि ॥
छं० ॥ १०९ ॥

मसि भींज दिननि पिय तन बनंग । अवतार अवनि जनु धरि अनंग ॥

मुष हर्ष गंड मंडल प्रकास। फरकंत अधर मधु रस विलास॥
छं० ॥ ११० ॥

विगसंत कमल छवि नयन भंडि। बंधूक अरुन रुचि षंडि छंडि॥
मधुमास सुक्ल निसि रुचिर चंद। बहि गंधपवन छबि सीत मंद॥
छं० ॥ १११ ॥

हुअ रोम पंचसर चंच देह। कलमलिय ज्वलिय बनिता सनेह॥
निसि प्रथम प्रहर तंटं गवन कीन। सुभ सोभ बाग मन हुअ अधीन
छं० ॥ ११२ ॥

सगपन्न धार इक लिय चढ़ाइ। जल्लैव इक्क अँग पवन पाइ॥
पिष्षे सु बाग बानिक रसाल। निरषंत नयन सोभा बिसाल॥
छं० ॥ ११३ ॥

निर्जन बन में यक्षों के एक उपवन का वर्णन।

दूहा ॥ उपबन घन बहल बरन। सीत पवन द्रुम जाल॥
चिचरेष बल्लिय बिटप। अवलंबि ताल तमाल॥ छं० ॥ ११४ ॥

तरु तल जल उज्जल अमल। टपकत फल रस भार॥
कुंज कुंज विगसत बसन। तन बढ़ि धात अपार॥ छं० ॥ ११५ ॥

पतत पच नहिं धर रहत। बानक बीन उजास॥
चंद जोति जल बानि बनि। होइ होत रस भास॥ छं० ॥ ११६ ॥

कवित्त ॥ फलन भार नभिं साष। जीभ रस स्वाद विवस षट॥
सुमन सघन बरषंत। गीत संगीत कोक रट॥
बँधि चहबच्चनि नीर। छब्बि छचन रंग धानिय॥
मंडित मंडप गौष। सुभग सालनि छबि न्यारिय॥
संभरिय राव बैठक बनक। कनक अलक कंचन पुरिय॥
प्रथिराज मुदित मादक तनह। बाजि राज नंष्यौ तुरिय॥ छं० ॥११७॥

पृथ्वीराज का दरवान को जीत कर भीतर बगीचे में जाना।

कढ़ि धरनि धुरतार। भारु भर सेस ससंकिय॥
उड्डि नाल असमान। उग्गि आकास चंद विय॥
पत पंषिय भर हरिग। अंग थर हरिग रष्षि कन॥

इक्क श्रवन झंझरिग । कठिन कवियान अष्प तन ॥
तुट्टिय पटाटि दवि अंग तुटि । विफरि अंग तूरिय सु रहिय ॥
सोमेसस्सूर चहुआन सुअ । तास कित्ति चंदह कहिय ॥छं०॥११८॥

बाग गिरद बर कोट । तास दरवान हुकम किय ॥
एकाकी हम रमत । कोइ न आवंन लहै बिय ॥
बैठि दरह दरवान । जानि जमदंड हथ्थं धरि ॥
पिथ्थ करह कम्मान । टंक पचीस जोर जुर ॥
लग्गो सु फिरन द्रुम द्रुम निकट । जषनी जष दरसन भयौ ॥
देषंत सोभ भुल्लिय नयन । मैंन रत्ति आनँग ठयौ ॥ छं० ॥ ११९ ॥

यक्ष यक्षिनी और पृथ्वीराज का वार्तालाप ।

दिष्षि जष्ष प्रथनाथ । हाथ जुग जोरि नवनि किय ॥
कवन काज इत अवन । नाम तुम कवन पुरुष चिय ॥
जष्ष नाम दुष दवन । नाम रंवनी रस वल्लिय ॥
नाटिक विविध विचिच । करन आगम रस रल्लिय ॥
सिर नीइ पिथ्थ कीनिय नवनि । कछू मोहि अग्या कहौ ॥
स्रु गंध धूप मिष्टान फल । करौं प्रगट बन पुर लहौ ॥ छं० ॥ १२० ॥

यक्ष का कहना कि अवश्य कोई बड़े राजा हो ।

दूहा ॥ कहिय जष्ष प्रथिराज सम । बानक इक्क अनूप ॥
दुरि पिष्यो द्रुम सघन तर । तुम कोइ भूप अनूप ॥ छं० ॥ १२१ ॥

पृथ्वीराज का वहां पर नाना भांति की सुख सामग्री मंगवा कर प्रस्तुत करना ।

पद्धरी ॥ सेवकन बोलि करि हुकम कीन । स्रुगंध धूप रस कल रसीन ॥
आनत्त वस्त लग्गै न वार । जहं तहँति आनि कीजै अमार ॥
छं० ॥ १२२ ॥

सुप होत हुकंम सेवक प्रवीन । सब वस्त आनि अम्मार कीन ॥
भरि कनक कुंड बर कासमीर । म्रिगमद जवादि अनपार भीर ॥
छं० ॥ १२३ ॥

कपूर कलस तहं धरिय आनि। कुमकुमनि कुंड सुभ भरिय थान ॥
केतकि कमल्ल केवर कुसुम्म। मालती बेल जाती सुरम्म ॥छं०॥१२४॥
चपक फूल पड्डुर अपार। जहं तहँ ति आनि किन्ने अमार ॥
तंबोल तच बानक अनंत। बुध विविध जाहि भूलत गनंत ॥
छं० ॥ १२५ ॥
दारिम्म दाष केला रसीन। अषरोट नासपाती नवीन ॥
नारियर पिंड षज्जूर आनि। बिज्जौर और फल बिबिध बानि ॥
छं० ॥ १२६ ॥
घ्रत दुग्ध मिश्र पकवान ढेर। आनंत तिनह लग्गी न बेर ॥
किय बिदा सब्ब सेवक बहोरि। दुरि बैठि पिथ्थ इक हच्छ ओर ॥
छं० ॥ १२७ ॥

गंधर्व राज का आना और नाटक आरंभ होना।

दूहा ॥ निमष होत गंध्रब्ब इक। सँग नाटिक आरंभ ॥
तंतिताल बीना म्रदंग। सँग अच्छरि लिए रंभ ॥ छं० ॥ १२८ ॥

अप्सराओं का दिव्यरूप और शृंगार वर्णन।

पद्धरी ॥ कुमकुमनि नीर कर मुष पषारि। अचवंत अमिय बर गंगधार ॥
करि गंध लेप अंगनि बनाइ। रचि कुसुम अंग गहने बनाइ ॥
छं० ॥ १२९ ॥
तंबोल बरनि कपूर षंड। फुनि कछे न्रित्य नाटक मंडि ॥
स्वर सपत ताल कल मनहरंत। बनि बीन जंच हथ्थन धरंत ॥
छं० ॥ १३० ॥
कटतार तार पट तार पाइ। संगीत भेद बरन्यो न जाइ ॥
रस राग रंग छत्तीस मंडि। धुनि धरत सिद्ध तन धर्म षंडि ॥
छं० ॥ १३१ ॥
अब रची रुचिर बीना प्रवीन। नारद नाद तंती अधीन ॥
रस सरस हास बरन्यौ न जाइ। सुभ कर्म्म धर्म्म सुत्र सोम पाइ ॥
छं० ॥ १३२ ॥

नाटक्क उठ्ठि फुनि बैठि देव। करि भोग भोज्ज मिष्टान सेव॥
हुअ नृपति अंनै कपूर मंडि। तंबोल तत्र कर बिरा षंडि॥
छं० ॥ १३३ ॥

सब सथ्थ बहुरि इक रह्यौ जष्षि। तिहि सथ्थ इक गंध्रब्ब दृष्ष॥
तिहि कह्यौ जष्ष रस रह्यौ आज। इह भुवन आनि सब संचिय साज॥
छं० ॥ १३४ ॥

पृथ्वीराज के आतिथ्य से प्रसन्न होकर गंधर्व का उन्हें एक सर्वसिद्ध कवच देना।

तिहि कही जष्ष जिहि कत्त काम। सोमेस पुत्र प्रथिराज नाम॥
गंध्रब्ब कही सुष प्रसन होइ। इक देउ मंत्र तन अभय सोइ॥
छं० ॥ १३५ ॥

सुनि जष्ष लीन प्रथिराज ताहि। मन मुदित अंग सुष रहे चाहि॥
गंध्रब्ब मंत्र दीनौ स धीस। सिर धारि हथ्थ दीनौ असीस॥
छं० ॥ १३६ ॥

गंधर्व जष्ष बहुरे अकास। तिहि निसा पिथ्थ तहं किन्न वास॥
छं० ॥ १३७ ॥

इति श्रीकविचंद विरचिते प्रथिराज रासके सुकवर्ननं नाम सैंतालिसमों प्रस्ताव संपूर्णम्॥ ४७॥

अथ बालुका राइ सम्यौ लिष्यते ॥

(अड़तालिसवां समय १)

राजसूय यज्ञ सम्बन्धी कार्यों के सम्पादन करने के लिये राजाओं को निमंत्रण भेजे जाना ।

कवित्त ॥ राज रनज सब काम । करें राजसु आरंभै ॥
नीच काम अरु ऊंच । अब्ब कारुह प्रारंभै ॥
नीति काम अरु ध्रम्म । बंज गज क्रम परिहारं ॥
देस देस फुरमान । दिए पहुपंग अपारं ॥
मंची सुमंत मति बंधि कै ; सबै देस फौजें फटी ॥
बर कित्ति करन जुग जुग लगै । इह कमंध जैचंद घटी ॥छं॰॥१॥

यज्ञ की सामग्री का वर्णन ।

नराज ॥ हियंत सोधि. राजसू जुराज जग्गि जोगयं ।
सवल्ल राज सामदंड भेदि बंध भोगयं ॥
सु दान मान अप्पि पाज. दैवयं न बीधयं ॥
सवत्त वत्तमान रे अनेक निद्धि सोधयं ॥ छं॰ ॥ २ ॥
सुबन्न भार लाष एक मुत्ति भार साठयं ।
रजक्क भार कोटि एक घातु भार नाठयं ॥
तुरंग भार लाषए गजेंद्र ग्रेह लष्ययं ।
कपूर कासमीरयं अनेक भार सष्ययं ॥ छं॰ ॥ ३ ॥
पटंबरं स अंबरं सुगंध, धूप डंबरं ।
सद्दत्त लाष च्यारि वा सदासि [1]नेस अंतरं ॥
सुमंत नाम नोदरे प्रजा प्रसन्न संतरं ॥
.... ॥ छं॰ ॥ ॥ ४ ॥

(१) ए.-नेम ।

षटानु अंस भाग विप्र संभने सुपचयं ॥
सु षोडसा प्रमान दौंन, वेद् वान अप्पयं ।
विराम गर्व दर्वने सु मंचि मंच भागयं ।
विचारि वीर राजसू जयंति जोति जागयं ॥ छं० ॥ ५ ॥

यज्ञ के हेतु आह्वान के लिये दसों दिशाओं में जयचन्द का दूत भेजना।

दूहा ॥ राज जग्य आरंभ किय । सेंबर सहित सँजोग ॥
मिलि मंगल मंडप रचिय । जहां विविध विधि भोग ॥छं०॥६॥
दिसि मंडल षँड षंडलह । पंग फिरे जु बसीठ ।
बल बंधौ दल हिंदु जौ । बंधौ मेच्छ सो ढीठ ॥ छं० ॥ ७ ॥
मत मंडित छंडित कलह । बल दीरघ प्रति बाम ॥
कहै पंग न्रप डंच मति । रहै सु रष्यौ नाम ॥ छं० ॥ ८ ॥
गाथा ॥ केकेन गया महि मंडलायं । बज्जाए दीह दसहांईं ॥
विप्फुरें जास कित्ती । तेगया न विगया हुंतीं ॥ छं० ॥ ९ ॥

जयचन्द का प्रताप वर्णन।

कवित्त ॥ स्वर्ग मंच जीतयौ । नाग जीतयौ मंच बल ॥
बल जीते द्रिगपाल । चढ़वि हे वे अभंग भर ॥
मुगत माल द्रगपाल । जित्त छल गोरे मारे ॥
द्रव्य सबल बल अग्ग । जग्य कारनह अधिकारे ॥
चिहु तेज चक्र ससि क्रास ज्यौं । तपै तेज ग्रीषम सु रवि ॥
संसार मान न्रप तेज बल । यौं सु धरा तौ तेज तवि ॥छं०॥१०॥
गाथा ॥ पहुवी कालह बलियं । कालह नमा कित्तियं बलियं ॥
जे नर कालह छलयं । ते कित्ती संजीवनं करयं ॥ छं० ॥११॥

जयचन्द का पृथ्वीराज को दिल्ली का आधा राज्य बांट देने के लिये संदेसा भेजने की इच्छा करना।

(१) ए.-जोगि। (२) ए.-जोग।

पद्धरी ॥ उच्चरै वीर पहु पंगराइ । हम मात तात द्रिग विजय चाइ ॥
मुक्कलै दूत बर मंच काज । मातुलह बंस प्रथिराज राज ॥छं०१२॥
हिंदू न जानि गुरु गुरुत्र पत्ति । चित्तंग राइ साहसह हत्त ॥
धर धरनि बंटि बिभ्भाइ लच्छि । जानै सु राज जिन तजी गच्छि ॥
छं० ॥ १३ ॥
बंधौ समेत जिन बलह भूमि । बरषै सुरांज ताम्रस अतूमि ॥
बर मिलै आइ पहुपंग पाइ । ढिल्ली समेत सोरौं लगाइ ॥छं०॥१४॥
अप्पैज़ भूमि तुम सेव जाइ । .... ॥
जिम जिम सु बसौ तुम चित चढ़ंत । तिम तिम सु दान पंगहु बढंत॥
छं० ॥ १५ ॥
अनि ठौर षेद जिन करौ चिंत्त । अप्पै सु भूमि दस गुनिय हित्त ॥
को करै पंग सों बल प्रमान । दिष्षौ न तीन लोकहि निदान ॥
छं० ॥ १६ ॥
अब अमित मंत इह तत्त जानि । गुरूबत्त तत्त मंची सु ठानि ॥
पय लग्गि सुनि रु परधान तब्ब । पहुपंग राइ बर हुकम सब्ब॥छं०॥१७॥

जयचन्द का पृथ्वीराज के लिये संदेसा ।

कवित्त ॥ मातुल हम तुम इक्क (१) इक्कि बंसह निरधारिय ॥
आदि बंस कमधज्ज । बरनै छत्रिय अधिकारिय ॥
तुम संभरि चहुआन । लयौ अजमेरति बीरं ॥
पंग देस सब भूमि । मंगै सो अब्ब उतीरं ॥
यों कियौ मंत ग्रह अप्प बर । सुमंति बोलि परधान न्नप ॥
छिति मत्ति छित्ति जोपन धरा । सुबर सूर साहस सु तप ॥छं०॥१८॥

जयचन्द की आज्ञानुसार कवियों का जयचन्द की विरदावली पढ़ना और मंत्री सुमंत का जयचन्द को यज्ञ करने से मना करना ।

(१) ए. अनूमि ।

पद्धरी ॥ थप्पै सुभट्ट राजस्स पंग। नर हरै पाप करवत्त गंग ॥
धुनि धुनि सु विप्र बोलैति बेद। तन करै न्रिमल अघ करै छेद ॥
छं० ॥ १९ ॥
ग्रह ग्रहन हेम कसि कसि सु नारि। मानौं कि सूर ससि छिन्न तार॥
जगमगै हेम विधि विधि बनाइ। जिम निगम अंत बसि बरुन आइ ॥
छं० ॥ २० ॥
ग्रह ग्रहन कलस तोरन समान। कैलास सिषर प्रतपै सुभान ॥
ग्रह ग्रहन गौष रष्यत बनाइ। कैलास डरह ससि अद्व पाइ ॥
छं० ॥ २१ ॥
ग्रह ग्रह कि पाट जगमग जराइ। कैलास लग्गि नवग्रह रिसाइ ॥
*कलि अंत पथ्य कनवज्ज राइ। .... छं० ॥ २२ ॥
सतपती सील धर भ्रम्म चाव। सुनि रोस कियौ पहु पंग राव ॥
मागधहु सूत बंदनि बुलाव। .... छं० ॥ २३ ॥
पुच्छयौ सु बंस कमधज्ज ग्रब्ब। हम बंस जग्य किहि कियौ पुब्ब ॥
जिहि बंस जग्य नन होइ राज। भुगतौ न भूप सुद्सर समाज ॥
छं० ॥ २४ ॥
तुम बंस भए कमधज्ज सूर। कीनौ सु राज राजस्स भूर ॥
तब बंस भयौ बाहुन नरिंद। अंतरिष रथ्थ चलि अग्ग कंद ॥
छं० ॥ २५ ॥
तुम बंस भयौ पूरूर सूर। रथ च्यारि चक्र जिहि जीति सूर ॥
सतसिंधु सूर जिह रथ्थ चील्ह। तुम बंस भयौ न्रप राज नील ॥
छं० ॥ २६ ॥
तुम बंस भयौ नलराइ अंद। नैषद्ध हार हौं धन्यौ बंध ॥
षट चक्र भए कमधज्ज आदि। किन्नौ नरिंद जिह बरुन बाद ॥
छं० ॥ २७ ॥
जीमूत धन्यौ जिहि चक्र सीस। संसार कित्ति कीनी जगीस ॥

* इस स्थान पर छंद के कुछ अधिक अंश खंडित मालूम होते हैं क्योंकि यहां के पाठ में अर्थ नितान्त खंडित होता है।

को कहै पंग सों दुष्ट आय। मंडै सुजग्य निहचैत राय॥
छं० ॥ २८ ॥
बारुन्न भूमि हय गय अनग्ग। परठंत पुन्न राजस्सु जग्ग॥
सोधिग पुरान बलि बंस बीर। भूगोल लिषित दिष्षिंत सहीर॥
छं० ॥ २९ ॥
छिति छत्र बंध राजन समान। जित्तेति सकल हय गय प्रमान॥
पुच्छै सुमंत परधान तब्ब। अब करहुं जग्य जिम चलहि कब्ब॥
छं० ॥ ३० ॥
उत्तर सुदीन मंत्री सुजानि। कलिजुग्ग नाहि विय जुग प्रमान॥
करि भम्म देव देवल अनेव। षोडसा दान दिन देहु देव॥
छं० ॥ ३१ ॥
सो सीष मानि नृप पंग जीव। कलिजुग्ग नहीं अर्जुन सु भीव॥
भुकि पंगराव मंत्री समान। लहु लोह अब्ब बोलहु अयान॥
छं० ॥ ३२ ॥

जयचन्द का मंत्री की बात न मान कर यज्ञ के लिये सुदिन शोधन करवाना।

दूहा ॥ पंग वचन मंत्रीस उर। मन भिट्यौ न प्रमान॥
ज्यौं सायक फुट्टै नहीं। गुरु पथ्थर फ़ुजान॥ छं० ॥ ३३ ॥
पंग पट्ठिय जग्य जब। बत्त विविध धरै बज्जि॥
बर बंभन दिन धरहु सुभ। लगन महूरत रज्जि॥ छं० ॥ ३४ ॥

मंत्री का स्वामी की आज्ञा मानकर दिल्ली को जाना।

मानि हुकम पहुपंग कौ। चलि मंत्री बुधि बीर॥
कै साधै चहुआन कों। कै धर बंटै धीर॥ छं० ॥ ३५ ॥
राज बचन सेवक सुभ्रम। तत्व बचन करि जानि॥
दिस दिल्ली ढिल्ली धरा। संभरि वै परिमान॥ छं० ॥ ३६ ॥
भुजंगी ॥ संभारियं राज चित्तं पुनीतं। जहा साधियं मंच मंत्री अनीतं॥

(१) ए.-अवाहं।